दानचन्द्रिका

श्रीयुत महाराज परमहंस श्यामदासजी के चरण कमल
सेवी श्रीवृन्दावन निवासी श्रीदामोदरदासजी

कृत

जिसमें दान वृतादिक बहुत से पुराणों से मथन कर के कलि
युग वासी जनों के उद्धारार्थ संक्षेप कर के
सूक्ष्म और स्वल्प विधि से लिखे हैं

जिसको

उक्त श्रीपरमहंसजी महाराज के चरण कमलानुरागी परम सेवक बाबू
करमचंद श्रीमाल रईस मकसूदाबाद ने विष्णु भक्तों के
मोक्षार्थ महाराज परमहंसजी की आज्ञानुसार

स्थान श्रीमथुराजी में लाला रामनारायणजी के प्रबन्ध से मथुरा नामक यंत्रालय में
मुद्रित कराया
सेवक श्रीगोपाल के दामोदर निज नाम
रंगनाथ के बाग में श्रीवृन्दावन धाम

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

४२	कपासपर्वतदान	८१	६७	फाल्गुणी।नक्षत्रमेंदान	१०३
४३	सोंनेकापर्वतदान	८१	६८	उत्तरानक्षत्रमेंदान	१०३
४४	गुड़कापर्वतदान	८२	६९	हस्तिनक्षत्रमेंदान	१०४
४५	घीकापर्वतदान	८३	७०	चित्रनक्षत्रमेंदान	१०४
४६	शक्करपर्वतदान	८४	७१	स्वातिनक्षत्रमेंदान	१०४
४७	मृगछालादान	८६	७२	बिशाखानक्षत्रमेंदान	१०४
४८	चांदीकामंत्र	८८	७३	अनुराधानक्षत्रमेंदान	१०५
४९	सोनेकामंत्र	८८	७४	ज्येष्टामेंनक्षत्रदान	१०५
५०	आप्याय	८९	७५	मूलनक्षत्रमेंदान	१०५
५१	दशतरहकीधेनुदान	९०	७६	पूर्वाषाढ़।नक्षत्रमेंदान	१०६
५२	तिलधेनुमंत्र	९४	७७	उत्तराषाढ़नक्षत्रमेंदान	१ ६
५३	जलधेनुमंत्र	९४	७८	अभिजितनक्षत्रमेंदान	१०६
५४	अन्नधेनुदेनेकामंत्र	९६	७९	श्रवणनक्षत्रमेंदान	१०६
५५	गुड़धेनुमंत्र	९८	८०	धनिष्टानक्षत्रमेंदान	१०६
५६	नोंनदेनेकामंत्र	९९	८१	शतभिषानक्षत्रमेंदान	१०७
५७	कपासकीदान	९९	८२	पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें	१०७
५८	नक्षत्रदान	१००		दान	
५९	कृतिकानक्षत्रमेंदान	१०१	८३	उत्तराभाद्रपदनक्षत्रमें	१०७
६०	रोहिणीनक्षत्रमें दान	१०१		दान	
६१	मृगसिरानक्षत्रमेंदान	१०१	८४	रेवतीनक्षत्रमेंदान	१०७
६२	आर्द्रानक्षत्रमेंदान	१०२	८५	अश्विनीनक्षत्रमेंदान	१०७
६३	पुनर्वसूनक्षत्रमेंदान	१०२	८६	भरणीनक्षत्रमेंदान	१०८
६४	पुष्यनक्षत्रमेंदान	१०२	८७	श्राद्धबिधि	१०९
६५	अश्लेषानक्षत्रमेंदान	१०२	८८	पतिमंत्र	११६
६६	मघानक्षत्रमेंदान	१०३	८९	पतिस्तुति	११७

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

९०	शनीव्रत	११८	१०९	व्रतांक व्रत	१४९
९१	नक्षत्रपूजन	१२०	११०	उद्यापन	१४९
९२	ब्रह्मकूंचव्रत	१२४	१११	लक्षवत्तीव्रत	१५०
९३	वैलदान	१२४	११२	६० व्रत	१५२
९४	भैंसदान	१२५	११३	शिवव्रत	१५२
९५	रक्षाबंधन	१२६	११४	प्रीतिव्रत	१५२
९६	वकरीदान	१२७	११५	कामव्रत	१५३
९७	अनंतव्रत	१२८	११६	सारस्वतव्रत	१५३
९८	शिवरात्रीउद्यापन	१३२	११७	घृतव्रत	१५३
९९	शिवपूजन	१३५	११८	सूर्यव्रत	१५४
१००	अन्नचढ़ानेकीविधि	१३५	११९	बिष्णुव्रत	१५४
१०१	एकादशीउद्यापन	१३८	१२०	रुद्रव्रत	१५४
१०२	शिवपरलक्षअन्नपूज	१३९	१२१	कांतिव्रत	१५४
	नउद्यापन		१२२	कल्पवृक्षव्रत	१५४
१०३	रामनाममलिखनेकाम	१४०	१२३	धराव्रत	१५५
	हात्म्यउद्यापन		१२४	भवानीव्रत	१५५
१०४	ऋषिपंचमीउद्यापन	१४२	१२५	सोमव्रत	१५५
	तिलदान	१४३	१२६	अहिंसाव्रत	१५५
१०५	सुरूपाद्वादशीव्रत	१४४	१२७	धान्यव्रत	१५६
१०६	वारहमासदान	१४६	१२८	सोमवतीव्रत	१५७
१०७	कुमारीपूजन	१४७	१२९	उद्यापन	१५८
१०८	राज्यव्रत	१४९	१३०	पयोव्रत	१५९

इतिश्री

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री

श्रीगणेशायनमः

अथ श्रीयमुना महात्म्य लिख्यते

कुरुक्षेत्र पुष्कर ब्रह्मावर्त और जो २ तीर्थ हैं ॥ तिन सें श्रीयमुनाजी वासुदेव कों ज्यादा प्यारी हैं ॥ इ सें जो कामना करै स्वर्ग धन उमर शरीर आरोग्य रहे ॥ और जो कुछ कामना करै ॥ सब के देने वाली श्रीयमुनाजी हैं ॥ और यमुनाजी में श्राद्ध दान स्नान करै ॥ अक्षय फल होय ॥ ऐसी श्रीयमुनाजी कों हे युधिष्ठिर कौन छोड़गा ॥ कलयुग में श्रीयमुना जल बिना और गति नहीं है ॥ और जो कर्म हैं ॥ विधि श्रद्धा सहित करने से फल देते हैं ॥ श्रीयमुनाजी स्नानमात्र से फल दे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ती हैं ॥ इस लोक परलोक के क्लेशन की नाश क
रनेवाली हैं ॥ श्रीयमुनाजी जैसें दोनों पक्ष में च
न्द्रमा बढ़ै है और घटै है ॥ इसी माफ़िक पाप ना
श होते हैं ॥ पुण्य बढ़ता है स्नानमात्र से जैसे स
मुद्र सब रत्न की खान है ॥ ऐसें श्रीयमुनाजी स
व सुख की खान है ॥ और जैसें चिन्तामणि ॥
और कामधेनु से जो मांगो देती हैं ॥ सतयुग में
तप त्रेता में यज्ञ द्वापर में पूजा कलियुग में श्री
यमुना स्नान ॥ जैसे बादर से ढका चन्द्रमा न
हीं प्रकाशता ॥ ऐसें श्रीयमुनाजी के स्नान बि
ना धर्म्म नहीं प्रकाशै ॥ व्रत दान तप से हरि प्र
सन्न नहीं होते हैं ॥ श्रीयमुनाजी के स्नान से
प्रसन्न होते हैं ॥ जैसें और चीज़ से प्राण राज़ी
नहीं होते ॥ भोजन करने से तृप्त होते हैं ॥ और
जैसें सूर्य्य के तेज के बराबर और तेज नहीं है
इसी माफ़िक और जो कर्म्म हैं ॥ श्रीजमुनाजी
के स्नान के बराबर नहीं हैं ॥ श्रीयमुनाजी के

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

स्नान से वासुदेव प्रसन्न होते हैं ॥ अवैष्णव ब्रा
ह्मण जैसे नष्ट हैं ॥ श्रद्धा बिना धर्म्म नष्ट ॥ ब्रा
ह्मण में भक्ति नहीं वो क्षत्री नष्ट ॥ पाषण्ड से
धर्म्म नष्ट ॥ क्रोध मे तप नष्ट ॥ मनन किये
बिना ज्ञान नाश होता है ॥ बात सुनकर मन में
ख़ूब बिचारें ॥ इसको मनन कहते हैं ॥ प्रमा
द से वेद नष्ट ॥ पराये पुरुष में जिस स्त्री का म
न हो वह स्त्री नष्ट ॥ विभचारी ब्रह्मचारी नष्ट
जैसे राख में होम नष्ट ॥ कपट की भक्ति नष्ट ॥
कन्या से जिनकी जीविका वे नष्ट ॥ अपने वा
स्ते रसोई करनी वैश्वदेव आदिक न करना वो
भी नष्ट ॥ शूद्र की भिक्षा करने से योगी नष्ट ॥
कृपण का धन नष्ट ॥ अभ्यास बिना विद्या नष्ट
और जीविका के वास्ते तीर्थ जाना ॥ और कि
सी से कुछ लेकर व्रत करना ये भी नष्ट ॥ झूठ
और दूसरे की चुगली करनी निन्दा करनी ये भी
नष्ट ॥ और जिस मंत्र का अर्थ नहीं जानें वो भी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नष्ट ॥ चित्त सावधान नहीं ॥ और जप किया वो
भी नष्ट ॥ और नास्तिक मनुष्य नष्ट ॥ अश्रद्धा
से जो कुछ किया है ॥ दोनों लोक नष्ट ॥ जैसे
दरिद्री को न इस लोक में सुख न परलोक में
जैसे ये सब नष्ट हैं ॥ ऐसे श्रीयमुनाजी के स्नान
बिना मनुष्य का काल नष्ट होजाता है ॥ उपपा
तक सब और बड़े २ पाप ये सब श्रीयमुनाजी
के स्नान से नष्ट होते हैं ॥ श्रीयमुनाजी के स्ना
न की मन में बिचारी और पाप उसी वक्त कांप
ते हैं ॥ स्नान से सब पाप से छूटजाता है ॥
जैसे बिना धुआं की अग्नि प्रकाशती है ॥ ऐ
से निष्पाप पुरुष होजाता है ॥ और जैसे बिना
बादर को चन्द्रमा प्रकाशता है ॥ ऐसे निष्पाप
पुरुष ॥ और गीले सूखे छोटे बड़े काष्ठ को अ
ग्नि जलाता है ॥ ऐसे तीन प्रकार के पापन कों
श्रीयमुनाजी जलाती हैं ॥ बाणी के मन के श
रीर के ॥ और परमाद सें जो पाप करै मूर्खपने

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

से ॥ और ज्ञान से और अज्ञान से ॥ ये सब यमु
नाजी के स्नान मात्र से नाश होते हैं ॥ हे युधि
ष्ठिर महाराज नारदजी कहते हैं ॥ सब पापन
से छूटकर स्वर्ग को जाय ॥ सन्देह न करौ ॥
श्रीयमुनाजी के स्नान में ऐसा महात्म्य है ॥ जै
से विष्णु की भक्ति के सब अधिकारी हैं ॥ ऐसें
श्रीयमुनाजी सब पाप नाश करती हैं ॥ श्रीयमु
नाजी का स्नान है ॥ सोई परममंत्र है ॥ सोई प
रम तप है ॥ प्रायश्चित येही हैं ॥ परम अनेक
जन्म के अभ्यास से कालिन्दी में स्नान करने
को मन होगा ॥ अध्यात्मज्ञान वेदान्त के अ
नुसार चलने वारे अनेक जन्म में अभ्यास होते
होते इस संसार की कीच से छूटते हैं ॥ हे नृप
युधिष्ठिर इत्त्यादिक पाप नाशने के उपाय हैं ॥
श्रीयमुनाजी पवित्र करने वारेन को पवित्र क
रती हैं ॥ स्नानमात्र से ॥ और निर्मल भोगन
की देनेवारी हैं ॥ जैसे सूर्य्य चन्द्रमा ऐसे दिव्य

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लोकन की देनेवारी हैं ॥ और मथुरा में श्रीय मुनाजी में स्नान करै मुक्ती पावै ॥ सब जगह कालिन्दी विष्णुलोक के देनेवारी हैं ॥ किन्तु मथुरा में कृष्ण की भक्ति देती हैं ॥ भक्ति सहित जो श्रीयमुनाजी में मंजन करेंगे ॥ वे कोटि कल्प हरि के लोक में बसेंगे ॥ अन्त में मोक्ष। बिना सांख्य के जाने कोटि कल्प पित्री स्वर्गवास करेंगे ॥ श्रीयमुनाजल के पीने से हजारों पंचगव्य से क्या मतलब ॥ कोटि तीर्थन मे क्या मतलव ॥ श्रीयमुनाजी में दान होम श्राद्ध करै कोटि गुणा पुण्य होय ॥

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीयमुनामहात्म्ये नारदयुधिष्ठिरसंबादे ऊनत्रिंशोध्यायः भाषाटीकायां श्रीदामोदरदासेण कृताः

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्रीनारदजी एक इतिहास कहते हैं ॥ सतयुग में
एक वैश्य हुआ ॥ हेमकुण्डल नाम था ॥ बड़ा
धनी था ॥ बड़ा धर्म्मात्मा था ॥ जो धन थावो
विष्णु के हेत लगाता हुआ और अनेक शुभकर्म
में लगाता हुआ ॥ अन्त में दो पुत्र थे उनको
बाकी का धन देकर बन में जाकर तप कर श
रीर त्यागकर बिष्णुलोक को गया ॥ पुत्रन को
नाम श्रीकुण्डल और दूसरो विकुण्डल ये दो
नों बड़े पापी थे ॥ परस्त्री परधन हिंसा करनी
कुपात्रन को धन देना अनेक पाप करते थे ॥ ए
क दिन शिकार के वास्ते बन में गये ॥ वहुत से
जीव मारे ॥ अन्त में एक को शेर ने मारडाला
और दूसरे को सर्प ने मारा ॥ दोनों को यम के दू
त लेगये ॥ यमराज कहने लगा कि बड़े को न
र्क में लेजाओ छोटे को स्वर्ग में ॥ यमराज से
पूछने लगा ॥ हम दोनों भाइयों ने जन्म से पाप
किये और इस जन्म में कुछ नहीं किया ॥ यम

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

दूत बोला तू नहीं जानता ॥ हम कहते हैं सो सुनों कुटम्ब में हज़ार होते हैं ॥ कोई किसी के सुख दुःख के संगी नहीं होते ॥ तू ने एक हरिमित्रब्राह्मन के पुत्र से मित्रता कीनी थी ॥ हरिमित्र के पुत्र के संग से तू ने माघमास भर यमुना स्नान किया ॥ दूसरी साल फिर किया ॥ एक महीना के स्नान से सब पापन से छूटगया दूसरे से स्वर्ग मिला ॥ युधिष्ठिर मार्कण्डेयजी से पूछते हैं कि श्रीयमुनाजी का क्या महात्म्य है क्या फलहै जैसा तुमने देखा होय और सुना होय सो कहो ॥ मार्कण्डेयजी कहते हैं ॥ सूर्य्य की बेटी तीनोंलोक में विख्यात हैं ॥ जिन २ देसन सें श्रीयमुनाजी निकली हैं ॥ वो देश पवित्र हैं ॥ विष्णु से गंगाजी निकली हैं और विष्णु की श्रीजमुनाजी हैं हजार योजन सें यमुना यमुनाजी कहै तो सर्व पापन को नाश करती हैं और स्नान करै पीवै ॥ हे युधिष्ठिर सात कुलको तारती है ॥ और जो श्री

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

यमुनाजी में प्राण त्यागता है ॥ वो परमपद कोपा
ता है ॥ देवता और ऋषी और तीर्थ सब श्रीयमु
नाजी का सेवन करते हैं ॥ श्रीगंगाजी का औ
र श्रीयमुनाजी का दोनों का बराबर फल है ॥
गंगा लोक में बड़ी कहाती हैं ॥ इस सबब से
ज्यादा पूजा है ॥ किस तरह बड़ी हैं ॥ जैसे
श्रीकृष्ण का नाम जगत में बड़ा होरहा है ॥
श्रीकृष्णरूपी श्रीयमुनाजी हैं ॥ नामरूपीश्री
गंगाजी हैं ॥ नाम का जप ध्यान बिना सिद्ध
नहीं ॥ ध्यानरूपी श्रीयमुनाजी हैं ॥ हे यु-
धिष्ठिर प्रातः काल इसका पाठ करे सुनें ॥ स
ब पापन से छूटकर स्वर्ग को जाय ॥

इति श्रीपद्मपुराणे आदिखण्डे चत्वारिंशो
ध्यायः ॥ ४ ॥ इतिश्री दामोदरदा
सेण कृता भाषायं ॥

अथ चातुरमास व्रत युधिष्ठिर नार
द सम्बाद लिख्यते

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

देवसयनी एकादशी से नेंम करै॥ श्री भगवान के सामने जोकुछ करना होय वरषा ऋतु में॥

अथ नेंम लिख्यते

ज़मीन में सोवे ॥ अश्वमेध यज्ञ का फल होय मीठी वस्तु त्यागने से सरस्वती प्रसन्न होय ॥ तेल त्यागने से सब सुख होवै ॥ घी त्यागे गन्धर्व होवै ॥ करुए तेल कों त्यागे शत्रुनाश होवें ॥ फुलेल त्यागने से सदां सौभाग्य होवै ॥ फूल त्यागे स्वर्ग कों जाय ॥ योगाभ्यास करै ब्रह्मलोक कों जावे ॥ खट्टा चरपरा छोड़ै सुगंधीबस्तु पावै बहुत ॥ रूपवान होवै पान छोड़ै भोगी होवे फलन को छोड़ै पुत्रवाला होवे ॥ ढ़ाक के पत्ता में खाय बड़ा रूपवान होय भोगी होय ॥ दीपदान के करने में तेजस्वी होय ॥ धनी होवैं ॥ दही दूध छोड़ै गोलोक कों जाय ॥ ० ॥ मौनव्रत करै चार महीना राजा होवै ॥ कढ़ाई के वने

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पकवान छोड़ने से इन्द्रलोक कों जाय ॥ विष्णु
के मंत्र कों एक वक़्त भी जपै चातुरमास में तो ह
ज़ारगुणा फल होय ॥ विष्णुलोक कों जावै भू
मी में भोजन करै फ़क़्त ज़मीन में रखकर पत्ता
पर नरखे ॥ ऐसे भोजन करै राजा होवै ॥ भग
वान के मंदिर को धोवै अथवा लीपै ॥ एकक
ल्प विष्णुलोक में बसै ॥ एक सौ आठ परिक्र
मा करै ॥ विष्णुकी विमान में बैठकर वैकुण्ठ
जावै ॥ गाने बजाने का नेम करै ॥ विष्णु के सा
मने चार महीना गन्धर्वलोक कों जावै ॥ गौ कौ
दूध दही घी गोबर गोमूत्र इन पांचों वस्तुन के
भोजन करने से चान्द्रायन के फल को पावै ॥
जो चार महीना कथा सुनता है बांचता है ॥ व्या
सजी की प्रसन्नता से विष्णुलोक कों जाय ॥ तु
लसी की पूजा का नेंम करै ॥ हरिप्राप्ती होवै ॥
ठंढेजल से घरमें स्नान करै गरमजल से नकरै
पुष्कर के स्नान का फल होवै ॥ जो पत्थर की

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कूंडी में भोजन करता है ॥ प्रयाग के फल कों प्राप्त होता है ॥ तांबे के पात्र में भोजन करै ॥ नीमषारण्य की जात्रा के फल कों लाभ करै ॥ ढाक के पत्ता की पातर अपने हाथ घर में बना कर भोजन करै अग्निहोत्र यज्ञ के फल कों पावे ॥ जो कमल के पत्ता में भोजन करता है ॥ उसने चान्द्रायन किया ॥ एक दिन खाना एक दिन न खाना स्वर्ग जावे ॥ अनेक दान देना अनेक तीर्थ करना ॥ इन सबों से जो फल होता है वो कमल के पत्ता के भोजन का महात्म्य है ॥ सबकामना के देनेवाला है ॥ कमलपत्र का भोजन बीच में पत्ता के जो गौ के खुर के माफिक होता है ॥ वहां भोजन न करै बड़ा दोष होता है जो कपिला गौ को दोहन करता है ॥ और कपिला बैल को जोतता है ॥ पाखाने का कीड़ा होगा ॥ हजारों वर्ष बकरी जो पालता है और दूध पीता है ॥ वो नर्क को जाता है ॥ नक्तभो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जी तारा दीखजायं तब भोजन करै स्वर्ग कों जाय
जो बिना मांगे भोजन करता है जो तलाव कूआ
बावड़ी बनाने वारेन कों फल होता है सो पाता
है ॥ और जो सब जीवन पर दया रखता है ॥
वो विष्णु कों बड़ा प्यारा है ॥ दया और दस इ
न्द्री जीतना और दान तीनों वेद ने बराबर कहे हैं
गुरु को जो शरीर और पुत्र धन नाती अर्पन कर
ता है वो विष्णु वल्लभ होता है ॥

श्लोक

शूद्रेणदीक्षितोयस्तु शूद्रः शूद्रे
णदीक्षितः ॥ उभौतौपापिनौ प्रो
क्तौ यावदाभूत संप्लवं ॥ १ ॥

अर्थ

शूद्र से जिसने उपदेश लिया है ॥ और शूद्र को
शूद्र ने उपदेश किया है दोनों महा प्रलय तक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नर्क भोगेंगे ॥ दोनों पापी हैं ॥ कलियुग में शूद्र पाषंडी बहुत से हैं ॥ इन सें बात करने सें पाप है गायत्री का जप और ब्रह्मज्ञान की बात करने से शूद्र सौ कल्प तक नर्कवास करैगा ॥ जो एक वक्त भोजन करताहै॥ वो चक्रवर्त्ती राजा होताहै गेंहूं चांवल जो नहीं खाता चार महीना वो अश्वमेध यज्ञ के फल को पाता है ॥ तुलसीपत्र और तिलन से पित्रीन का पूजन करै ॥ कोटिगुणा फल होय ॥ जो विष्णु के सामने एक भी वेद की रिचा को उच्चारण करता है ॥ अथवा जो कुछ पढ़ा होय ॥ नेंम से चार महीना करै ॥ एक २ अक्षर में गोदान है ॥ चार महीना ब्रह्मचर्य्य से रहै ॥ एक मन्वंतर विष्णुलोक वास करै ॥ जो रोज आंवले शरीर से लगाकर स्नान करता है॥ सब पाप नाश होवें ॥ जो चार महीना तीन वक्त मौन से रहता है ॥ दोनों संध्या और भोजन चार मन्वंतर स्वर्गवास करैगा ॥ जो अपने हाथ की

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

बनाई रसोई चार महीना खाता है दश मन्वन्तर इन्द्रलोक वास होवे ॥ चार महीना जो मौन से रहता है ॥ वो विष्णुलोक को जावै ॥

रलोक

मौनभोजीनरोयस्तु कदाचिन्ना
वसीदति ॥ मौनेनभुंजमानास्तु
राक्षसास्त्रिदिवंगताः ॥ १ ॥
पुंसांभोजनकालेतु हुंकारोयदि
निर्गतः ॥ सर्वमेवसुरामांसं त
स्मात् हुं विवर्जयेत ॥ २ ॥

अर्थ

मौन से जो भोजन करता है ॥ कभी दुःख नहीं पाता ॥ मौन के भोजन से राक्षण भी स्वर्ग को गये ॥ १ ॥ हुंक र ने से सुरा मांस समान भोजन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

होजाता है ॥

श्लोक

क्रमिकीटसमायुक्तं पक्वान्नम
शुचिर्भवेत् ॥ गवांमांससमंज्ञे
यं अन्नंचापि द्विजोत्तम ॥ २ ॥

अर्थ

अनेक छोटे २ जीव मिले हैं अन्न में लाख य-
त्न करो ॥ बिना जीव का नहीं होसक्ता ॥ इसी से
गौमांस समान है ॥ ऐसे अन्न को मनुष्य खाते हैं
ऐसा अन्न राक्षसन कों प्यारा है ॥ राक्षसों ने ब्र
ह्मा को प्रसन्न किया ब्रह्मा ने उनको दिया ॥ मौ
न से जो भोजन करते हैं ॥ उनको दोष नहीं ॥

श्लोक

मौनेनभोजयित्त्वातु स्वर्गंप्राप्ता न

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

संशयः ॥ संजल्पनभुंजतेयस्तुते
नान्नमश्नाचिर्भवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ

मौन से जो भोजन करता है वो स्वर्ग जायगा संशय नहीं ॥ और जो बात करते भोजन करते हैं वे अशुद्ध अन्न खाते हैं ॥ ३ ॥

श्लोक

पापंसकेवलंभुंक्ते तस्मात्मौनंस
माचरेत् ॥ उपवाससमंभोज्यं
ज्ञेयंमौनेननारद ॥ ४ ॥

अर्थ

बिना मौन जो भोजन करता है वो पाप खाता है इस दोष को जानकर चुप होकर भोजन करे ॥ श्रीमहादेवजी कहते हैं ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

हे नारदजी उपवास समान है ॥ जो मौन से भो
जन करता है ॥ पांच प्राणरूपी अग्नि है ॥ ति
न में होम करता है भोजन नहीं ॥ यज्ञ के स
मान है ॥ चुपका भोजन पांच प्रकार के पाप गृ
हस्थ से होते हैं ॥ वो भी नाश होते हैं ॥ चारम
हीना हजामत नकरावै नाखून न ले ॥ दिनेदि
ने गंगास्नान फलं ॥ विष्णसहस्त्रनाम का औ
र कुछ भगवान की कथा का पाठ करें ॥ कोट
गुणा फल होय ॥ जिसने चौमांसे में कुछ नेम
नहीं किया उसका जन्म पशू समान है ॥ ४ ॥

श्लोक

चातुर्मासमिदंपुण्यं पवित्रंपाप
नाशनं ॥ श्रुत्वातुलभतेपुण्यं गं
गास्नानभवंमुने ॥ ५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अर्थ

चार महीना के नेम ये हैं ॥ बड़े पवित्र पाप ना शने वाले सुनने पढ़ने से श्रीगंगाजी का फल होवै

इति श्रीपद्मपुराणे उमापती नारद सम्बादे उत्तरखण्डे चातुर्मास्य महिमा ध्यायः॥

इस मंत्र से रोज स्नान करै

मंत्र

अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुंधरे ॥ मृतिके हर मे पापं यन्म यापूर्वसंचितं ॥१॥

अर्थ

माटी लेकर शरीर से लगाकर स्नान करै ॥ तिल आंवले मिला ले ॥ हे मृत्तिके मेरे पूर्वजन्म

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

के किये हुए पाप दूर होंसे प्रार्थना कर स्नान करै

इति श्रीदामोदर दासेन कृता भाषायं ॥

अथ चातुर्मास की उद्यापन विधि

लिख्यते

व्रत करिकें जो उद्यापन नहीं करै उसको फलन हीं ॥ व्रत कों नेंम करि कें छोड़ै नहीं ॥ बीच में खंडित होने से अंगहीन होता है ॥ इस कारण से जैसा नेंम किया होय वैसा पूर्ण करै ॥ जो जो वस्तु छोडी हैं उन उन कों ब्राह्मण को देय ॥ तेल जिसने छोड़ा होवे वो घी देवै ॥ घी जिसने छोडा होवै वो दूध देवै ॥ मौन व्रत वारो तिल के लड्डू दे ॥ सोना सहित ॥ जिसने कुछ खाने की वस्तु छोडी होंय दही भात ॥ और जो वस्तु आपने छोड़ी होंय वो भी दे ॥ और सोना सहित अन्न दे ॥ अन्नदान से विष्णुलोक कों जाय ॥ढाक के पत्ता में जिसने भोजन किया होय ॥ घी

ब्राह्मण महामण्डल कश्मीर
क्रमाङ्क ———
दिनाङ्क ———

के बने पकवान दे ॥ जिसने नक्त शाम को भो
जन किया होय अनेक तरह के भोजन करावै ॥
जिसने अपने घर में बिना मांगे भोजन किया
होय ॥ वो सोना शहत दे ॥ जिसने उड़द खाना
छोडा होय ॥ वो गौ वत्सा सहित दे ॥ जिसने
आंवले के फल से स्नान किया होय ॥ वो आं
वले के फल का चूरन दे ॥ जिसने फल छोड़े
होंय वो फल दे ॥ जिसने चांवल छोडे होंय
वो चांवल देय ॥ जो धरती में सोया होय वो
रुई भरी गद्दी तकिया दे ॥ जो चार महीना ब
ह्मचर्य से रहा होय ॥ वो ब्राह्मण की स्त्री सहि
त दोनों को भोजन करावै ॥ जिसने स्नान का
नेम किया होय ॥ वो ब्राह्मण कों सीधा देय ॥
जिसने चार महीना हजामत नकराई होय ॥
वो ब्राह्मण को शीशा देय ॥ जिसने जूती छो
डी होयं ॥ वो जूती दे। जिसने मांस छोड़ा होय
वो कपिला गौ वत्सासहित ब्राह्मण को देय ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जिसने चार महीना दीपदान किया होय ॥ वो सो
ने का दीपक घी सहित देय ॥ जिसने कुछ शा
क छोड़ा होय वो शाक देय ॥ जिसने पान छो
ड़े होयं वो पान देय कपूर सहित और सोना ॥
और जो जो नेम किया होय वो वो देवे ॥

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे उमापती
नारद सम्बादे चातुर्मास्यो उद्यापनं
नाम अध्यायः

इति श्रीदामोदर दासेणकृता भाषायं ॥

अथकार्त्तिक महात्म्य लिख्यते

कार्त्तिक के व्रत का नेम आश्विन शुक्ला एकाद
शी से करै ॥ सत्त्यभामा कृष्ण सम्बाद ॥ सत्त्य
भामा श्रीगोविन्द से पूछती हैं ॥ कि आपकी
के हज़ार रानी हैं ॥ तिन में मैं क्यों सब सेज्या
दा प्यारी हूं आपको क्या मैं ने करणी करी है

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सो कहो ॥ श्रीकृष्ण कहते हैं ॥ कार्त्तिक मास में तुला के सूर्य्य में प्रातस्नान करै ॥ महा पापी होय वो भी मुक्त कों प्राप्त होय ॥ और विष्णु पूजा करै ॥ वो जीवन मुक्त है ॥ तुलसी सेवा दीपदान करै ॥ वो विष्णुतुल्य है ॥ देवशर्म्मा ब्राह्मण की बेटी थी ॥ उस जन्म में कार्त्तिक के ब्रत करने से ऐसी मेरी प्यारी भई लक्ष्मीसे ज्यादा ॥ देवशर्म्मा तेरा पिता सत्राजित भया इस जन्म में तू ने मन्दिर के सामने तुलसी लगाई थी उस पुण्य से तेरे महल में कल्पवृक्ष लगाया ॥ कल्पवृक्ष के गुण कहां तक कहेंगे जो २ मन में कल्पना करो वो देय ॥ चाहे सो मांग ले ॥ दीपदान के फल से तेरे घर में वे शुमार धन है ॥ और जो कुछ करती थी वो मेरे अर्पण करती थी ॥ इस सबब से मेरी स्त्री भई ॥ अपने पती को विष्णु समझती थी ॥ मरन पर्य्यन्त तूने कार्त्तिक ब्रत नहीं छोड़ा जो कार्त्तिक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्रत करेंगे वो भी ऐसे प्यारे होंगे ॥ जैसी तू है ॥ नाभि तक जल में जाकर स्नान करै ॥ आंवले और तिल लगाकर ॥ सप्तमी नौमी दौज दशमी तेरस इनमें आंवले लगाकर स्नान करै ॥ स्नान समय सूर्य्य शिव विष्णु इनका ध्यान करै ॥ और तुलसी के पास विष्णु का पूजन करै और तुलशी का पूजन करै और स्तुती करै ॥

श्लोक

मंत्रहीनंक्रियाहीनं भक्तिहीनंसु
रेश्वरः ॥ यत्पूजितंमयादेव परि
पूर्णंतदस्तुमे ॥१॥

अर्थ

आंवले के नीचे कार्त्तिक में जो कुछ दान करै ॥ पूजा भोजन कोटि गुणा फल होय ॥ ब्रह्मा से आंवले की उत्पत्ति है ॥ पार्वत्ती से मालती भई

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लक्ष्मीजी से तुलसीजी उत्पन्न भई ॥ आंवले के फल पत्ता तुलसी और मालती के फूल इन से विष्णु का पूजन करै कार्त्तिक में इसमहात्म्य को कौन कहसक्ता है ॥ पांच प्रकार के स्नान हैं ॥ एक गौ के गोवर की भस्म शरीर मे शिवमंत्र से लगावे ॥ दूसरो गौअन के खुर की रज ॥ तीसरो सूर्य्य दीखते होयं और जल वरषै ॥ इस वर्षा में खड़ा होकर सूर्य्य के सामने स्नान करे दिव्य है॥ चौथो तीर्थ में ॥ पांचमो ब्राह्मण के मंत्र से ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये वेद के मंत्र से करें ॥ स्त्री और शूद्र ये फकत मौन होकर करें ॥ कार्त्तिक में प्रातः काल तारन की छाया में स्नान करै दिव्य है ॥

श्लोक

रोमकालेतुसम्प्रासे सोमोभुंक्तेतुकन्यकां ॥ रजःकालेतुगंधर्वा वन्हिस्तु कुचदर्शने ॥ १ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अर्थ

कन्या की वगल में रोम दीखने लगें चन्द्रमा भोगता है ॥ ऋतुवती होने से गन्धर्व भोगते हैं ॥ छाती हो आने पर अग्नि भोगता है ॥

श्लोक

तावद्विवाहयेत्कन्यां यावन्नऋतुम
तीभवेत् ॥ विवाहस्त्वष्टवर्षीयाःकन्य
याःशस्यतेवुधै ॥

अर्थ

इस वास्ते जव तक कन्या ऋतुवती नहोवै ॥ तव तक विवाह करदे ॥ आठ वर्ष की का करना कहा है कार्त्तिक मास में किसी का अन्न न खाय ॥ तेल और शहद छोडे ॥ इन से चांद्रायन के फल को पावै ॥ कार्त्तिकमास में मांस को छोडे ॥ हरि को वड़ा प्यारा ॥ ज़मीन में सोवै ॥ ज़मीन का फल होवै ॥ ढांक के पता में भोजन करै ॥ कार्त्तिक में पुष्कर माघ में प्रयाग वैशाख में उज्जैन में

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जो फल होता है ॥ सो पाता है ॥ अंत में दामोद
र के लोक कों जाय ॥ कार्त्तिक में एक लाख तु
लसी चढावै ॥ एक २ दल में मोती का फल है
कमल का फूल चढ़ावै कमलापति कों ॥ पुष्क
र का रोज ध्यान करै ॥ सब पाप सें छूटै ॥ का
र्त्तिक में जिसने महीना भर व्रत किया ॥ उसने
व्रत तीर्थ दान सब करलिये ॥ व्रत की समाप्ति
में शैय्यादान करै ॥ अपनी श्रद्धा माफिक सो
ने की मूर्त्ति बनवावै ॥ शय्या पर रखदे ब्राह्म
ण भोजन करावै ॥

इति श्रीपद्मपुराणे कार्त्तिकव्रत विधि
समाप्तम्
श्रीदामोदरदासेण कृता भाषायं ॥

अथ ऋषिपंचमीव्रत

भादों मास शुक्लपक्ष की ऋषिपंचमी महीना में
जो स्त्रीधर्म्म होता है ॥ इस काल में देवता ब्राह्म
ण तीर्थ पित्री इनका जो पाप बना होय ॥ उस्की

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

शद्धी होय इस व्रत से ॥ एक ब्राह्मण था ॥ उसकी स्त्री ने श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन के वास्ते दूध आया था वो छीलिया इस पाप से पिता के घर में कुतिया भई ॥ पिता वसिष्टजी के पास गया ॥ बेटी का हाल कहा ॥ वशिष्टजी ने यह व्रत बताया ॥ ब्राह्मण के घर में अथवा तीर्थ में जाकर गौ के गोबर पर कुंभ रक्खै॥ कुंभ कहते हैं घड़े को ॥ इस घडे में फल रक्खे सोना भी रक्खे ॥ सप्त ऋषीन का घड़े पर पूजन करै ऋषी धान का भोग धरै ॥ इसी धान को आप खाय एक वक्त ॥ ऋषीधान समा आदिक घड़ा ब्राह्मण को दे घी और दक्षिणा सहित देवै इस व्रत का फल ब्राह्मण ने अपनी बेटी कों दियो वो स्वर्ग कों गई ॥

इति श्रीपद्मपुराणे ऋषीपंचमीव्रत समाप्तम

तुलसी की लकड़ीन से जो होम करै ॥ एक आ

हुती लाख आहुतीन के बराबर है ॥ तुलसी की लकड़ी जलाकर जो दीपक जोड़े ॥ एक दीपक लाख दीपक के बराबर है ॥ गौ के दहने सींग को तांबे के घड़े में धोवै ॥ कुशा अक्षत लेकर इस जल को स्त्री अपने पति को दे ॥ वो स्नान करले ॥ जो बचे उससे आप नहाय ॥ त्रिलोकी में जितने तीर्थ हैं सब के स्नान का फल होवै जब कुछ पर्व होय या कुछ व्रत करै ॥ तब तौ जरूर करै ॥ अगस्त के फूल का शाक खाय एक दिन में वर्षदिन के पाप नाश होवैं ॥ इन्हीं फूलन से पूजा करै मोक्ष पावे ॥

अथभीष्मपंचक

एकादशी कार्त्तिक शुक्ला को राधादामोदरजी का पूजन करै ॥ गौ का गोबर खाय ॥ द्वादशी को गोमूत्र पीवै ॥ तेरस को दूध पीवै ॥ चौद स को दही खाय ॥ पांचवें दिन राधा दामोदर जी का पूजन करै ॥ ब्राह्मण भोजन करावै ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

आप उसदिन शाम को पंचगव्य पीवै ॥ दूध द
ही घी गोमूत्र गोवर कुशा का जल धोकर अथ
वा फल अथवा पूरी खाय ॥ जो नरह्वा जाय ॥ इ
न पंचकन के रहने से श्रीनारायण के समान
होजाता है ॥

श्लोक

श्रीकृष्णउवाच

कार्त्तिकेशुक्लपक्षस्य शृणुधर्म्मं
पुरातनं ॥ एकादश्यास्समारम्यवि
ज्ञेयंभीष्मपंचकम ॥ दुष्करंभीष्म
मित्त्याहुरशक्यंतदिहोच्यते ॥ य
स्तंकरोतिराजेन्द्र तेनसर्वंकृतंभवे
त ॥ १ ॥

कार्त्तिक शुक्लपक्ष की एकादशी से पांच दिन भी
ष्मपंचक कहते हैं ॥ इन पांच दिन में शुभकर्म
करना कठिन है ॥ इसी से भीष्मपंचक कहते हैं
पांच दिन फल खाकर रहै ॥ ब्रह्मचर्य से रहै ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कठोर बचन किसी से न बोले ॥ शाक खाकर
रहैं ॥ अथवा हविष्य अन्न खाकर रहैं ॥ मूंगभा
त होम दान जो कुछ करैं अनन्त फल होय ॥
पूनों के दिन पाप पुरुषदान करै ॥ लोहे का ब
न वावैं ॥ भयंकर डरपावने नेत्र बनवावे ॥ तल
वार हाथ में तिल के ऊपर बैठावै ॥ कारे कपड़े
से ढांक दे ॥ सोने के कुंण्डल पहरावैं ॥ कन्नेर
की माला ॥ धर्म्मराज के नाम से पूजन करै ॥
हाथ में फूल लेकर इस मंत्र से दे ॥ इस जन्म
के और अनेक जन्म के पाप मेरे नाश होंयं ॥
कृष्ण मेरे ऊपर प्रसन्न होंयं ॥ किसी को प्र
तिमा देवैं ॥

इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे भीष्मपंचक
व्रताध्यायः

कार्त्तिक कृष्णपक्ष की चौदश कों चन्द्रमा उद
य होते समय स्नान करै ॥ तिली का तेल लगा
कर ॥ इस दिन तिली में लक्ष्मी बसती है ॥ज

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ल में गंगाजी ॥ इस कारण से महात्म्य है ॥ जिस वक्त आधा स्नान होजाय ॥ उस वक्त अपामार्ग अर्थात जिसको ओंगा कहते हैं इसका पेड और करौंदा की डाल और तूंबी सिर के ऊपर भ्रमावे ॥ सात वक्त भ्रमाकर फेंक दे ॥ सर्व पाप नाश होत हैं ॥ इस मंत्र से स्नान करै ॥

मंत्र

सीतल्लोष्टसमायुक्तः सकंटकदलान्वितं ॥ हरपापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः ॥

इतिपुष्करपुराणे

कार्त्तिक कृष्णपक्ष की चौदश को नरकन के नाम का चार बत्ती का दीपक जोरै ॥ इस मंत्र से ॥

मंत्र

ततोदीपश्चतुर्दश्यां नरकप्रीतयेमया ॥ चतुर्वत्तिसमायुक्तं सर्वपापापनुत्तये ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथयमद्वितीया

यमुनाजी ने यम का पूजन किया है जव से च ली है ॥ यमद्वितीया को बहन के हाथ का भो जन करना चाहिये ॥ उमर बढती है ॥ धन सं पदा होती है ॥ भाई को बीडा दे ॥ भाई बह न को वस्त्र आभूषण दे ॥ यम का और यम दूतन का पूजन करैं ॥ इस मंत्र से यम को अ र्घ दे ॥

मंत्र

राह्येहिमार्त्तण्डजपासहस्तयमांत
कालोकधरामरेश ॥ भ्रातृद्विती-
यांकृतदेव पूजांगृहाणवार्घ्यंभग-
वन्नमस्ते भ्रातस्तवानुजाताहं भुं
क्ष्वभक्तमिदंशुभं ॥

अर्थ

इस व्रत के करने से विधवा नहीं होय

इति मदन रत्नाकरे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथकार्त्तिकस्नानमंत्र

कार्त्तिकेहंकरिष्यामिप्रातःस्नानंज
नार्दन ॥ प्राप्त्यर्थंतवदेवेश दामोदर
मयासहा ॥

इस मंत्र से स्नान करै

अथअर्घमंत्र

गृहाणार्घ्यंमयादत्तं राधयासहितो
हरे ॥

अर्घा में सोना पुष्प डाल ले ॥ इस माफिक जो अर्घ दे ॥ उसने सोना बिछाय कर पृथ्वी दान-की ॥ आंवले की माला को जो धारण करता है उसके शरीर के जितने रोम माला में छीजायंगे उतने हजार वर्ष वैकुण्ठ वास होगा ॥ अगस्तके पुष्प से पूजा करै ॥ उसका जो दर्शन करे वो नर्क को नजाय ॥ धात्रीवृक्ष के नीचे जो श्राद्ध करै ॥ पित्री मोक्ष पावैं ॥

श्लोक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफल
विभूषितः ॥ धात्रीफलकृताहारो
नरोनारायणोभवेत ॥ धात्रीछाया
समाश्रित्ययोऽर्च्चयेच्चक्रधारिणं ॥
पुष्पेपुष्पेऽश्वमेधस्यफलं प्रप्नोतिमा
नवः ॥

धात्री वृक्ष के नीचे दामोदर कों अनेक तरह के भोग लगावै ॥ खीर से होम करै ॥ ब्राह्मण भोजन करावै ॥ आप कुटुम्ब सहित करै ॥ कार्त्तिक में एक वक्त भोजन करै परमपद पावै ॥ कार्त्तिक में आकाश दीपक जोरै ॥ तिली के तेल सें हरि के नाम से ॥ बडी लक्ष्मी पावै और रूप सौभाग्य मिलै ॥ जिस वक्त सूर्य्य अस्त होजाय घर के पास एक खंभ साढे तीन हाथ का गाढे ॥ इस खंभ के ऊपर चार पाखरी का कमल का पुष्प ऐसे आकार की पट्टी खंभ के ऊपर रक्खै ॥ लकड़ी आम पीपर गूलर इन वृक्ष

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

न की होय ॥ इसके ऊपर दीपक रक्खे ॥ धर्म महादेव भूमी दामोदर पित्री ब्रह्मा ऋषी ये सब प्रसन्न होते हैं ॥

इस मंत्र से दीपक स्थापन करै

मंत्र

दामोदरायनभसितुलायां लोलया
सहप्रदीपंते प्रयच्छामि नमोनंताय
वेधसे ॥

कार्त्तिक शुक्लपक्ष तेरस को यमदीपक घर के बाहर जोरै ॥ अकालमृत्यु नहीं होती

इस मंत्र से जोरै

मृत्युनापाशदंडाभ्यां कालेनश्यया
मयासह ॥ त्रयोदश्यांदीपदानात्
सूर्य्यजः प्रीयताममेति ॥

इतिमदनरत्नाकरे

अथकार्त्तिकउद्यापन

शुक्लपक्ष की चौदस को तुलसी के ऊपर मंडप

बनावै ॥ इसके ऊपर कलशा रक्खै ॥ पंचरत्न सहित ॥ इस कलशे के ऊपर हरि का पूजन करै ॥ गुरू की आज्ञा से रात्रि में जागरन करै पूनों कों तीन ब्राह्मण स्त्री सहित अथवा एक को स्त्री सहित भोजन करावै ॥ खीर तिल से होम करै ॥ कपिला गौ दे ॥ गुरू का पूजन करै ॥

इतिमदनरत्नाकरे

कार्त्तिक उद्यापन समाप्तम्

कार्त्तिक में कोई दार नखाय ॥ श्रावण में शाक नखाय ॥ भादों में दही ॥ आश्विन में दूध नखाय ॥ ज्येष्ट की पूनों को ज्येष्ठा नक्षत्र में छत्री जूती ताड का पंखा जल का घड़ा चन्दन इन दानन सें राजा होता है ॥ वामनजी प्रसन्न होते हैं ॥

इति श्रीहेमाद्रि शास्त्रे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्लोक

यासतीभर्तुरुच्छिष्टं भुंक्तेपदोदकं सदा ॥ तस्यादर्शसुपस्पर्शं नित्त्यंवांच्छंतिदेवताः॥

अर्थ

जो पतिव्रता स्त्री पती का झूठन खाती है ॥ और पती के पैर के जल का सेवन करती है उसके दर्शन की और छीने की चाहना देवता भी करते हैं ॥

अथचांद्रायण

किसी महीना में करै ॥ कार्त्तिक अगहन वैशाख माघादिक ॥ पूनों को पंद्रह ग्रास खाय ॥ पडिवा से एक २ कम करै ॥ मावस को कुछ नखाय॥ पडिवा से एक २ ग्रास बढ़ाता जाय ॥ पूनों को पंद्रह पूरे होजायं ॥ अन्त में ब्राह्मण भोजन करावै ॥ तीन वक्त स्नान करै ॥ सोने का चन्द्रमा दे ॥ हविष्य अन्न को खाय ॥ ग्रास जितना

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मुहं में समावे ग्रास बनाकर रखले ॥ पहले गा यत्री से अथवा मंत्र से प्रोक्षन करै ग्रासन कों

अथ छोटा चांद्रायण

चार ग्रास सवेरे खाय चार दिन छिपे

अथ सांतपन

गोमूत्र गोबर दूध दही घी कुशा को जल तीन दिन पीवै ॥ एक दिन उपवास करै सब पापन तें छूटजाय ॥

अथ अतिकृच्छ्रव्रत

तीन दिन तक एक ग्रास सवेरे एक शाम को विना मांगे खाय ॥ और तीन दिन तक कुछ न खाय ॥

अथ तप्तकृच्छ्रव्रत

एक दिन गरम जल एक दिन घी एक दिन दूध तीनों गरम पीवै स्वर्ग कों जाय ॥

अथ पराकव्रत

बारह दिन भोजन नकरै सर्व पाप के नाशनेवारा है ॥ स्वर्ग के देनेवाला है ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इति श्रीमनुस्मृती पराकव्रत समाप्तम्

अथवैशाखमहात्म्यलिख्यते

अम्बरीष पूछते हैं ॥ श्रीनारदजी से सब मासन में वैशाख मांस श्रेष्ठ है ॥ जैसे देवन में विष्णु तीर्थन में श्रीगंगाजी ऐसें मासन में वैशाखमास श्रेष्ठ है ॥ जो कुछ तप दान पूजा प्रातस्नान करै ॥ अनन्तफल होय ॥ जैसें अन्न से प्राण ख़ुश होते हैं ॥ ऐसें वैशाख स्नान से विष्णु ख़ुश होते हैं ॥ सब पाप सें छूटकर वैकुण्ठ को जाय ॥ घर में नकरै ॥ बाहर कहीं जल होय वहां स्नान करै ॥ सब तीर्थ बाहर के जल में वास करते हैं ॥ चार घड़ी दिन चढ़े तक जो नहीं जाते हैं ॥ स्नान करनें ॥ उनको शाप दे कर चले जाते हैं ॥

इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमहात्म्य

अध्यायः

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जो माधवमास में नेम कुछ नहीं करता वो महापापी है ॥ एक तरफ सब दान रक्खे एक तरफ जलदान रखकर तोला ब्रह्मा ने सब से जलदान ज्यादा रहा ॥ रस्ता में प्याऊ लगावे ॥ सब देवता राजी होते हैं ॥ जो जल का घडा दान नहीं करता ॥ वो पपैया होता है ॥ जो छत्री दान नहीं करता ॥ वो जहां छाया नहीं एसे बन में पिशाच होता है ॥ जो खडाऊं और जूती देता है ॥ वो राजा होता है ॥ जो अनाथ को छाया बनवा देता है और कहीं से ब्राह्मण आया ॥ उसको अच्छी वस्त्रन से खुश करे ॥ तो इस पुण्य को ब्रह्मा भी नहीं कहसक्ता ॥ जो पलंग दान करता है वो योगीन की गती को जाता है ॥ सब पापनाश होते हैं ॥ जैसे कपूर जलाने से नाश होता है ॥ और वस्तु की राख दीखती है कपूर की नहीं ॥ गद्दी तकिया देवे ॥ सर्व सुख होवे ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ब्रह्मलोक जाय ॥ चटाई दान करै ॥ सीतल पट्टी दान करै ॥ विष्णुलोक कों जाय ॥ कं वल देवै किसी से भय नपावै ॥ कपूर देवै मो क्ष पावै ॥ खस का दान जल छिरक कर ॥ सर्व भोग पावै ॥ गोरोचन कस्तूरी दान सें ती नों ताप से छूटै ॥ मोक्ष पावै ॥ चौडी कपूर सहित देवै ॥ राजा होवै ॥ कमल के जुही के केतकी के चमेली के फूल देवै तो स्वर्ग को जाय ॥ सुपारी नारियल देवै तो सातजन्म ब्राह्मण होवै ॥ पान सुपारी देवै ॥ सब पापसे छूटै ॥ इन्द्रलोक को जाय ॥ नोन जीरा डाल कर छाछ देवै ॥ मोक्ष पावै ॥ दही देवै तोब्र ह्मलोक कों जाय ॥ चांवल देवै तो सर्वयज्ञ के फल को पावै ॥ पेडादान से अनन्तफल पावै ॥ शर्वत दे सब पापों से छूटै ॥ पकेआं व दान करै सब पापन सें छूटै ॥ तेल न ल गावै दिन में नसोवै ॥ कांशे के पात्र में भोजन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नकरै ॥ खाटपर नसोवै ॥ शाम को भोजननकरे ॥
कमल के पत्ता में भोजन करै ॥ सब पापों से छूटै
वैकुण्ठ को जाय ॥ वैशाख में जो कुछ करै वड के
वीज के माफिक वढता है ॥ वैशाख में भगवत
कथा सुनें बांचै जो नहीं सुनें पिशाच होवै ॥ गौदा
नकरै ॥ मुक्तिपावै ॥ वैल दान करै वड़ी उमर पावै
पंखा दान करै वायुलोक कों जाय ॥ घीया औ
र गाजर और लहसन और पिसे तिल नखाय
तरबूजो मूरी के फल न खाय ॥ वैंगन न खा
य ॥ और युग में जो हजारों वर्ष से फल होता
है ॥ वो कलियुग में दिन रात में होता है ॥
अक्षयतृतिया को शत्तू शर्बत के दान से स्व
र्ग को जाय ॥ पंचामृत में स्नान करावे ॥ सब
पापों से छूटै ॥ जैसे सर्प कांचरी छोड़ता है ॥
शुक्लपक्ष की द्वादशी में जो कुछ करै दानादि
क अनन्त फल होय ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्लोक

पुराकाश्मीरदेशेतु द्विजोदेवव्रताह्व
यः ॥ तस्यासीन्मालिनीनाम तनया
चारुरूपिणी ॥

अर्थ

एक काश्मीर में देवव्रत नाम ब्राह्मण हुआ ॥ उस की बेटी देवमालिनी थी ॥ पती के गई ॥ पती राज़ी नहीं ॥ इस ने एक योगिणी के पास से कुछ जड़ी लाई ॥ पति के गले में बांधी ॥ पति को स्वास का रोग होगया पति बोला अब मैं तेरे आधीन हुआ ॥ फिर योगिणी से जड़ी लाई पति को दी अच्छा होगया इस पापिनी का हाल सुनें ॥ पति को दास किया वशीकरण मंत्र से ॥ इस सबब से सब शरीर में कीड़ा पड़गये ॥ मरकर भंगिन हुई ॥ फिर ब्राह्मण के घर में कुतिया हुई ॥ उस ब्राह्मण ने वैशाख मास का व्रत किया ॥ स्नान करिकें आया ॥ जहां ब्राह्मण ने पैर धोये थे ॥ वहां जाक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

र कुतिया लोटी ॥ पूर्व जन्म के सब पाप यादहु
ए ॥ ब्राह्मण ने वैशाख शुक्लपक्ष की द्वादशी
में व्रत दान स्नान जो कुछ किया ॥ वो सब पु
ण्य कुतिया को दिया ॥ कुतिया बद्रीनारायण
के उरू से उर्वसी अप्सरा हुई ॥ इसके बराब
र स्वर्ग में और सुन्दर नहीं है ॥ ऐसा दोष है।
जो पति को अपने वश में करती हैं ॥ स्त्री को
पति से ज्यादा और की सेवा नहीं है ॥ जो वै
शाख मास में महीना भर स्नानादिक कुछ न
करसके ॥ तो शुक्लपक्ष के तीन दिन करै ॥
तेरस चौदस पूनों इन तीन दिन का बड़ा म
हात्म्य है ॥ जैसे कार्त्तिक में भीष्मपंचक दा
न होम श्राद्ध व्रत पाठ स्नान ब्रह्मचर्य जो कु
छ करै ॥ तीन दिन अमृत के समान होजाता
है ॥ तेरस को देवतन को अमृत पिलाया है
चौदस को असुर मारे ॥ पूनों को देवतन को
राज मिला ॥ इस सबब से देवतों का बरदान

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तीन तिर्थीन कों जो कुछ करै उसका अनन्त फल होय ॥

इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखम हात्म्यअध्यंयः

अक्षयतीज महात्म्य लिख्य०

देवासुर संग्राम में इन्द्र ने वलिराजा को जीता पीछें चौतथ्यऋषि की स्त्री गर्भवती को सोत में इन्द्र ने भोगाकिया ॥ पेट के वालक ने पैर से वीर्य्य को बाहर फैंकादिया ॥ इन्द्र ने वाल क को श्राप दिया कि जन्म से अन्धा हो ॥ वो दीर्घतपा मुनी भरा ॥ इन्द्र शरम के मारे ॥ हेमांचल पर्व्वत की गुफा में जाकर तप करने लगा ॥ बलि ने स्वर्ग को राज लेलियो ॥ सर्व देवतों ने ब्रहस्पतिजी से पूछा कि इन्द्र कहां हैं ॥ ब्रहस्पतिजी ने सब हाल कहा ॥ सब देवता इन्द्र के पास गरा ॥ इन्द्र देवतों को देखकर नीचे को देखने लगा ॥ ब्रहस्पतिजी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

बोले हे इन्द्र संताप मति करै ॥ पूर्वजन्म कीक
रणी से सब सुख दुख होता है ॥ एक उपाय
बताते हैं सो करो ॥ वैशाख मास की अक्ष
य तृतिया को जो कुछ दान पूजा स्नान श्रा
द्ध जप पाठ करै सो अक्षय होता है ॥ इन्द्रने
अक्षयतृतिया के प्रताप सों फिर इन्द्रपद पा
या ॥ जब से अक्षय तीज संसार में चली है

इति श्रीस्कंदपुराणे अक्षयतृतिया
श्रेष्ठत्त्व कथनं नाम त्रियोविंशो
अध्याय समाप्तम्

अथपानदानविधिलिख्यते

एक सोने का पान बनवावे ॥ जिस दिन कुछ
पर्व होवे ॥ उस दिन अच्छे सुपात्र ब्राह्मण
को बुलवा कर पूजन करै ॥ सोने के पान प
र चूना रक्खै और मूंगा और सुपारी और सु
पारी के पास मणि रक्खै और कत्था रक्खै
और कत्था के पास चांदी इस मंत्र से देवै ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र

यन्मयाभक्षितंपूर्वंवतंपत्रसमुद्भ
वं ॥ चूर्णपत्रतथैवान्य रात्रौखादिर
मेवच ॥ तस्यपापस्य शुध्यर्थंतांबू
लंमेप्रगृह्यतां ॥

इतिश्रीस्कंदपुराणे नागरखण्डे वैशाख
महात्म्य श्रीदामोदर दासेणकृता
भाषायंसमाप्त

श्लोक

अक्षतैपूज्यतेविष्णु स्तेनसाप्यक्ष
यास्मृता ॥ अक्षयंफलमाप्नोति सर्व
स्यसुकृतस्यच ॥

अर्थ

अक्षयतीज को विष्णु का पूजन अक्षतन से करै
इसीसे अक्षयतीज कहते हैं ॥ और जो कुछ करै
अक्षयफल होय ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्लोक

अक्षतैस्तुनरस्नातो विष्णोर्दत्त्वातथा क्षतान् ॥ विप्रेषुदत्त्वातान्नेवतथा श क्तून सुसंस्कृतान ॥

अर्थ

अक्षतन से आप स्नान करै ॥ विष्णु कों चांवलों का भोग धरै ॥ और ब्राह्मणों को चांवलों का शत्तु बनाकर दे ॥ अथवा यव का शत्तू और यव लगाकर स्नान करै ॥

श्लोक

तृतीयायांसमभ्यर्च्यसोपवासोजना र्दनं ॥ राजसूयफलंप्राप्यगतिमग्र्यांच विंदति ॥

अर्थ

अक्षयतीज का व्रत करै राजसूय यज्ञ का फल पावै ॥ उत्तम गति पावे ॥ संक्षेप से लिखा है इति श्रीमत्स्यपुराणे अक्षयतृतीयामहा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

त्म्य समाप्तम

अथलोहितस्नान

चैत्र में शक्लाष्टमी को लाल जल से स्नान करै ब्रह्मलोक कों जाय ॥ जो राक मास करै मोक्ष होय ॥ रोली आदिक से लाल जल करले ॥

इस मंत्र से करै

मंत्र

ब्रह्मपुत्रमहाभाग शंतनोः कुलसं
भवः ॥ अमोघागर्भसंम्भूत पापंलो
हित्त्यमेहरः ॥

अथप्रेतस्नान

चैत्र कृष्णपक्ष चौदस कों शिवजी के सामने स्नान करै प्रेत नहोय अगस्तजी ने कहा है ॥

अथवैशाखउद्यापन

मंडप बनावै ॥ राक कलशा रक्खै ॥ राक मोहर अथवा आठ मांसे अथवा चार मांसे श्रद्धा माफिक लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा बनवावै ॥ पूजन

करै ॥ तिल घी डालकर खीर से होम करै ॥ एक हजार आहुती अथवा एक सो आठ इसमं त्र से होम करै ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः

एताबिष्णुस्वाहा

रात में जागरन करै ॥ एक गौ दे ॥ खड़ाऊं जूती छत्री पंखा शय्या मशहरी सहित दरप न दीपक ब्राह्मण भोजन करावै ॥ एक २ कलशा दे विष्णुलोक कों जाय ॥

इति श्रीवामनपुराणे वैशाखउद्या पनसमाप्तम्

वैशाख की पूनो को घी अन्न जल घडा धर्म्म राज के नाम से दे ॥ गौदान फल होय ॥ सो ना तिल पांच ब्राह्मण को अथवा सात ब्राह्म ण को दे ॥ ब्रह्महत्या नाश होवै ॥ ज्येष्ठ की पूनों को अथवा रोज तिलदान करै ॥

अश्वमेधस्ययत्पुण्यं तत्प्राप्नोतिन संशयः

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इतिआदित्यपुराणे
अथदशहराज्येष्ठमांसे
हरतेदशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृ
ते ॥

किसी नदी में स्नान करै ॥ तिलोदक दे दश पाप से छूटै ॥ दश दश पुष्प फल से पूजन करै ॥ दीपक ताम्बूल नैवेद्य आदिक से ॥ दशहरा को दशयोग में स्वर्ग से श्रीगंगाजी आई हैं ॥ सोने की अथवा चांदी की अथवा मृतिका को प्रतिमा गंगाजी की गंगाजी के पास शिव ब्रह्मा सूर्य्य भागीरथ हेमाचल पर्वत इनका भी पूजन करै ॥ दश ब्राह्मणों को दश दश मुष्टी तिल दे ॥ दश दश मुष्टी जौ दे ॥ दश शत्तू के लड्डू दश गुड के दे ॥ और मछली कछवा मेंडका मगर सोने के अथवा चांदी के अथवा आटे के बनावै ॥ और पूजन करै ॥ कारे तिल घी सहित गंगाजी में मछली आदिक स

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व को डालै ॥ और दीपक बहावै ॥ इस मंत्र से होम पूजन आदिक करै ॥ जप पांच हज़ार करै दश गौदान की बराबर फल होय ॥ गंगास्तोत्र का पाठ दश वक्त गंगाजी में खड़ा होकर करै ॥ सब पापन से छूटै ॥

मंत्र

ॐनमः शिवायै नारायण्यै दशहरा यै गंगायैन्नमोनमः ॥

निर्जला एकादशी का व्रत करै ॥ शर्वत के कलशा दे विष्णुलोक को जाय ॥

इति हेमाद्रि शास्त्रे

अथ सावित्रीव्रत

बांस के पात्र में एक सेर मृतिका भरै ॥ दो वस्त्रन से लपेटै ॥ इस मृतिका की सावित्री की मूर्ति बनावै ॥ अथवा सोने की ॥ वस्त्र आभूषण आदिक से प्रतिमा का पूजन करै ॥ हल्दी से सूत रंगकर सावित्री के कंठ में बांधै ॥ रात

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

में जागरन करै ॥ सवेरे ब्राह्मण को भोजन करा वै प्रतिमा दे दक्षिणा सहित इस मंत्र सें ॥

मंत्र

सावित्रीयंमयादत्ता सहिरण्यामहा सतीब्रह्मणः ॥ प्रीणनार्थायब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम् ॥

इस व्रत के करने से विधवा नहीं होय ॥ सावित्री की कथा महाभारत में बनपर्व में है ॥ सो सुनैं ॥

इतिमदनरत्नाकरे

अथजन्माष्टमीव्रत

जन्माष्टमी को तिलन से स्नान करे ॥ अच्छे घर में देवकी का सूतिक गृह करै ॥ पलंग पर चित्राम की प्रतिमा देवकी की हरि दूध पीते हुए सुलावै ॥ इसी माफिक यशोदा को करै कन्या दूध पीती हुई वसुदेव वलदेव नंद गर्गाचार्य्य गौ कंस का हाथी असुर शस्त्र।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

हाथ में काली यमुना ॥ हृदय में इन सब की प्रतिमा लिखै ॥ और पूजन करै ॥ देवकी का पूजन इस मंत्र से करै ॥

मंत्र

गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता
वेणुवीणानिनादैः ॥ शृंगारादर्शकुम्भ
प्रवरघृतकरैः॥ सेव्यमानापर्य्यंके
स्वास्ततेया मुदितनरसुखी पुत्रिणी
सम्यगास्ते सादेवी देवमाताजयति
जयति सुतनयादेवकीकान्त रूपा
पादौसंवाहयंती श्रीदेवक्यांचरणा
न्तिके निषण्णापंकजे पूज्यानमो
देव्यैश्रिये ॥

अथचंद्रअर्घ

शंख में जल भर चन्दन पुष्प कुशा डाल कर। घोंटुन सें पृथ्वी टेककर इस मंत्र से चन्द्रमा को अर्घ दे ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र

क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिगोत्रसमु
द्भवः ॥ गृहाणार्घंशशांकेमं रोहि
ण्यासहितोमम ज्योत्स्न्यायते नम
स्तुभ्यं नमस्तेज्योतिषांपते नमस्तेरो
हिणीकान्त अर्घ्यंनः प्रतिगृह्यतां

अथदेवकीअर्घ

यथापुत्रंहरिंलब्धा प्राप्तानेनिर्वृतिं
परांतामेवानिर्वृत्तिं देहिसुपुत्रं दर्श
यस्यमे ॥

अर्घ

पुष्पांजली दे ॥ प्रहर प्रहर में पूजन करै ॥ आधी
रात में गुड़ घी की वसुधारा दे ॥ नवमी को ब्रा
ह्मण भोजन करावै ॥ इस माफिक कृष्णपक्ष की
अष्टमी वर्ष दिन हर महीना की करै ॥ जो जो म
नोर्थ करै सब पूर्ण होंयं ॥ इस मंत्र से विसर्ज
न करै ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र

ॐनमोवासुदेवाय गौब्राह्मणाहिता यच ॥

इति अग्निपुराणे जन्माष्टमीव्रत ॥

समाप्तम्

श्रीदामोदरदासेण कृता भाषायं समाप्तम्

श्लोक

कर्मयोगोद्भवंज्ञानं तस्मात्तत्परमं पदं ॥ कर्मज्ञानोद्भवंब्रह्मन च ज्ञानं सकर्मण: ॥

अर्थ

श्रुति और स्मृति और अनेक शास्त्र की आज्ञा है ॥ जब तक शरीर के सुख दुःख लगे हैं ॥ और स्त्री धन पुत्र आदिक में जिसको सुख दुःख है ॥ वो ब्रह्म ज्ञान का अधिकारी नहीं है ॥ ऐसा पुरुष जो कर्म छोडेगा वो पशु होगा ॥ ज्ञान नहीं भया ॥ इससे मोक्ष नहीं हो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

गी और कर्म नहीं करे ॥ इस्से देवता मनुष्य न
हीं होगा पशु होगा ॥ पहले कर्म करैगा जब ज्ञा
न होगा ॥ कर्म से ज्ञान होता है ॥ पीछे परमपद
होता है ॥ कर्म से ज्ञानता ॥ ज्ञान से ब्रह्म जा-
ना ॥ ज्ञान से कर्म्म नहीं होता ॥

अथ माघमहात्म्य लिख्यते

वशिष्ट दिलीप सम्बाद ॥ पौष शुक्लपक्ष की
एकादशी से आरंभ करै ॥ ज़मीन में सोवै ॥ ती
न वक्त स्नान करै ॥ माघ के महीना में प्रयाग
में ॥ सब तीर्थ और सब ऋषी और सब देव
ता वास करते हैं ॥ अनेक जन्म के पाप नाश
होते हैं ॥ जो कल्प वास करते हैं ॥ दिने २
सोना दान का फल होता है ॥ माघ महात्म्य
के अनेक इतिहास हैं ॥ हम ने मतलब की
दो बात लिखी हैं ॥ काशी में उत्तरवाहिनी गं
गाजी हैं ॥ उस से हज़ार गुणा फल प्रयाग में
पश्चिम वाहिनी गंगाजी हैं ॥ यमुनाजी के मि

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लने को पश्चिम वाहिनी भई हैं ॥ माघ में ति
ल होम तिल खाना तिल से स्नान तिल कादी
पक ॥ अंगीठी भरकर अग्नि दान करै ॥ अग्नि
लोक को जाय ॥ सूर्य्य उदय होते समय स्ना
न करै ॥ मकर की संक्रांत को शिवजी को गौ
के घी से स्नान करावै ॥ एक ब्राह्मण के बाल
क ने संक्रान्त के दिन घी के पात्र में शिवजी
डालदिये अंत में बालक कैलाश को गया ॥
शहत तिलदान करै ॥ पान की बीडी दे ॥अ
न्नदान करै ॥ माघमास में दूध पीकर रहै ॥
वाजपेय यज्ञ के फल को पावै ॥ तिल धेनु
दान करै ॥ बशिष्ठजी के उपदेश से श्वेतराजा
ने तिल धेनु दान की ॥ स्वर्ग को गया ॥
श्वेतराजा ने तप दान बहुत कियौ ॥ अन्न
दान नहीं कियौ ॥ स्वर्ग से रोज़ आकर अप
ने शरीर की हड्डी चाटजाता ॥ एक दिन
वशिष्ठजी ने देखा ॥ राजा से सब हाल पूछा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वशिष्ठजी ने कहा तिल धेनु दान से फिर ऐसा
कर्म नहीं करैगा ॥ निरन्तर वास होगा ॥ गौ
का महात्म्य ब्रह्मा भी नहीं कहसक्ता ॥ थोड़े
में समझ लेओ ॥ और जिन गौअन के मूत्र सें
और गोवर में विष्णु आदिक देवतों को पंच ग
व्य से स्नान कराओ ॥ तुमको वो देवता अप
ना लोक देते हैं ॥ ऐसा संसार में और कौन है
जिनके मूत्र से और गोवर सें देवता प्रसन्नहो
वें ऐसी हैं ॥ गौअन कों जो घास डलवाता है
वो विधि सहित श्राद्ध करने के फल को प्राप्त
होता है ॥ अन्त में विष्णुलोक को जाता है ॥
जल के किनारे पीपर लगावै ॥ जितने पत्ता
जल में गिरें ॥ पर्वकाल में उतने पिंडदान करे
का फल होवै ॥ जो अपने घर के दर्वाजे मेंआं
वला लगाता है ॥ वो सब पापन सें छूटता है
एकादशी को अथवा रोज लगाकर आंवलेस्ना
न करता है ॥ वो विष्णुलोक को जाता है ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

आंवले को खाय सब पापन सों छूटै ॥ तुलसी लगावै ॥ तुलसी में विष्णु लक्ष्मी और सब देवता स्त्रीन सहित वास करते हैं ॥ प्रातःकाल जो तुलसी के दरशन करता है ॥ उसको सोना दान का फल होता है ॥ तुलसी की महिमा बडी है ॥

अथसूर्य्यव्रत

सब रोग के दुःख के नाश करने को सूर्य्य का व्रत हर महीना में इतवार का व्रत करै ॥ जल्दी मनोर्थ सिद्ध करना चाहै तो निर्ज्जल करै ॥ अथवा कुछ फल आहार ॥ और ये नकरै तो शुक्लपक्ष की सप्तमी हर महीना की करै ॥ शाम को हविष्य भोजन करै ॥ और इस मंत्रका जप करै ॥

मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्य्यायनमः ॥

इस मंत्र का जप सात हज़ार करै ॥ और इस

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र को तीन वक्त जल पढ़कर रोगी को पिला दे और सूंघे और जल में करुवा तेल मिला ले ॥

इस स्तोत्र का पाठ करै

ॐनमोसहस्त्रवाहवे आदित्त्याय नमोनमः ॥ नमस्तेपद्महस्ताय वरुणायनमोनमः ॥ नमस्तिमिर नाशाय श्रीसूर्य्यायनमोनमः ॥ नमः सहस्त्रजिह्वाय भानवेच नमोनमः ॥ त्वंचब्रह्मात्वंचाविष्णु रुद्रस्त्वंचनमोनमः ॥ त्वमग्नि सर्वभूतेषु वायुस्त्वंचनमोनमः सर्वगः सर्वभूतेषु नहिंकिंचितत्व याविनाचरा ॥ चरे जगत्यास्मिन् सर्वदेहेव्यवस्थितः ॥

इति पद्मपुराणेसृष्टिखण्डे सूर्य्यव्रत अध्यायसमाप्तम्

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

माघ मास में जो प्रयाग न जासके तो जहां स्नान
करै तिल आंवले लगाकर वहां स्नान के वक्त
प्रयाग का ध्यान कर स्नान करै ॥ प्रयाग के फ
ल को पावै ॥ सात धान का दान करै ॥ सा
त कल्प स्वर्ग में वास करै ॥ गेंहूं जौ मूंग उड़
द चना कांगनी धान ॥ धान नमिलें तो धान के
बदले तिल दे ॥ ये सात धान हैं ॥ बड की
जड़ें जो नीचे को लटका करें हैं ॥ उनको घि
सकर और शरीर से लगाकर और राई पीसकर
शरीर में लगाकर स्नान करै ॥ और दूध भात
खाय सब पापों से छूटै ॥

इति श्रीपद्मपुराणे सृष्टिखण्डे भीष्म पु
लस्त संम्वादे अध्याय

युधिष्ठिरजी श्रीकृष्ण से पूछते हैं ॥ कलियुग
में मनुष्य श्रद्धा हीन हैं ॥ किस तरह उद्धारहो
गा सो कहो ॥ श्रीकृष्ण कहते हैं ॥ जिस पुरु
ष की इन्द्री वश में होगी वो तीर्थ के फल को

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पावेगा ॥ श्रद्धा होगी वह फल पावेगा ॥ माघमास में प्रयाग पुष्कर कुरुक्षेत्र में अथवा कहीं करै ॥ माघमास में प्रातःकाल सब पाप से छूटकर परम गति पावै ॥ गर्म जल से स्नान न करै। ऋषि माघ के स्नान की बड़ाई करते हैं मनोवांच्छित फल पावै ॥ स्वर्ग को जाय ॥ सूर्य्य चन्द्रमा सरीके निर्मल भोग मिलें ॥ मकर के सूर्य्य में तीस दिन का नेम करै ॥ भगवान के सामने बिना वस्त्र ओढे स्नान करै ॥ एक एक पैर में अश्वमेध यज्ञ का फल पावै ॥ सूर्य्य को अर्घ दे ॥ पित्रन का तर्पण करै ॥ बिना वस्त्र तीर्थ की मृत्तिका मांथे पर लगावै ॥ भगवान का पूजन करै ॥ अग्नि में होम करै एक वक्त भोजन करै जमीन में सोवै ब्रह्मचर्य से रहै ॥ छः प्रकार तिल का सेवन करै ॥ अंत में ब्राह्मण भोजन करावै ॥ अनेक वस्त्र दे जूती मोज़ा दे ॥ इक्कीस कुल कों तारै ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

आप बैकुंठ कों जाय ॥

श्लोक

एकविंशकुलैः सार्द्धं भुक्तानुक्त्वा न्यथोषितान ॥ माघमास्युषसिस्ना त्वा विष्णु लोकं सगच्छति ॥

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे माघमास स्नानविधि अध्यायः

श्रीदामोदरदासेण कृता भाषायं समाप्तं शुभम्

अथअनन्तासप्तमीव्रत ॥

माघमास में शुक्लपक्ष की सप्तमी कोटि सूर्य ग्रहण के बराबर है ॥ स्नान दान करै ॥ और छठ को एक वक्त भोजन करै ॥ और सप्तमी को फ़क़त जल और सवेरे कोई स्नान नकरै ॥ उसके पहले स्नान करै ॥ सोने के पात्र में अथवा तूंबे के पात्र में जल भरै ॥ और मांथे पर तिलों के तेल का दीपकरखै

दीपक में पुष्प रखले ॥ सूर्य का ध्यान हृदय में करै ॥ और इस मंत्र से दीपक को जल में डालै ॥

मंत्र

नमस्तेरुद्ररूपाय रसानांपतयेनमः
वरुणायनमस्तेस्तु हरिवासनमो
स्तुते ॥

अर्थ

देवतन का तर्पण करै ॥ और चंदन से आठ दल का कमल लिखै ॥ इसके बीच में शिव पार्वती और ओंकार लिखै ॥ और आठों दल में आठ सूर्य्य के नाम लिखै ॥ पूर्व के दल में रवि लिखै ॥ अग्निकोण में भानु लिखै ॥ वैवस्वत दक्षिणकोण में ॥ नैऋतकोण में भास्कर लिखै ॥ पश्चिमकोण में सविता ॥ वायुकोण में अर्क ॥ उत्तर में सहस्त्र किरण ॥ ईशानकोण में सर्वात्मक ॥ इन सब का पूज

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

न करै ॥ इस मंत्र से आप स्नान करै ॥

मंत्र

यद्यज्जन्मकृतंपापं मयाजन्मसु सप्तसु ॥ तन्मेरोगंच शोकं च मा करीहन्तु सप्तमी ॥ एतज्जन्मकृतं पापं यच्चजन्मान्तरार्ज्जितं ॥ मनोवाक्कायजं यच्चज्ञाताज्ञाते चयेपुनः ॥ इति सप्तविधं ॥ पापंस्नानान्मे सप्त सप्तिकेसप्तव्याधि समायुक्तं हरमाकरीसप्तमी ॥

अर्थ

स्नान करि सूर्य्य और हरि का दर्शन करै ॥ सर्व पापों से छूटजाता है ॥

इतिमदनरत्नाकरे

इस दूसरे स्नान को भी इसी मंत्र से करै ॥ पोंडे से जल को हला ले ॥ और आक के सात पत्तां सिर पर रक्खै और सात वेर के पत्ता रखकर

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

स्नान करै ॥ और तिलन कों पीसकर माल पूआ बनावै ॥ सोना रखकर सूर्य को भोगल गाकर ब्राह्मण को दे ॥ इस मंत्र से सूर्य्य को अर्घ दे ॥

मंत्र

सप्तसीप्तवहप्रीत सप्तलोकप्रदीप नः॥ सप्तमींसहितोदेव गृहाणा र्घ्यंदिवाकर ॥ जननीसर्वलोका नां सप्तमीसप्तमापिके ॥ सप्तव्या हृतिकेदेवी नमस्तेसूर्यमंण्डले

अथभीष्मतर्पण

माघ शुक्लपक्ष की अष्टमी को भीष्मजी को तिलन से तर्पण करै ॥ श्राद्ध करै ॥ अन्न दान करै ॥ सन्तान होय ॥ वर्ष दिन केसर्व पाप नाश होयं ॥ नकरै तो वर्ष दिन का स र्व पुण्य नाश होय ॥

इस मंत्र से तर्पण करै

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र

भीष्मः सांतनवोवीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ अभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितांक्रियां ॥ वैयाघ्र पद्यगोत्राय सांकृत्य प्रवरायच ॥ अपुत्रायददाम्येत ज्जलं भीष्मा यवर्म्मणे ॥ वसुनामवताराय शंत नोरात्मजाय च ॥ अर्घ्यंददामि भीष्माय आवालब्रह्मचारिणे ॥

इति

जिसका पिता जीता होय वह भी करै

इति धवलनिबंधशास्त्रे

अथ कानका आभूषणदान

तांवे के पात्र में अथवा मृतिका के पात्र में पिसे तिल रक्खै ॥ और घी गुड़ रक्खै ॥ और सोने को कान का आभूषण कुछ बनवावै और सामर्थ्य नहोय तो तिलों को पीसकर तिलों

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

का बनवावै ॥ लालवस्त्र से ढांक दे ॥ और पूजन करै ॥ इस मंत्र से दान करै ॥

मंत्र

आदित्यस्यप्रसादेन प्रातः स्नान
फलेनच ॥ दुष्टदौर्भाग्य दुःखघ्नं
मयादत्तंतुतालकं ॥

इतिहेमाद्रिशास्त्र

अथमाघउद्यापन

पौषशुक्ला एकादशी से माघव्रत का नेम करै माघशुक्ला एकादशी व्रत कर द्वादशी कोउद्यापन करै ॥ ब्राह्मण सहित स्त्री का पूजन करै वस्त्र जूती मोजा कुरता रत्न दे और कहे माधवः प्रीयतामिति ॥ तिल घी से होम करै ॥ एक सौ आठ आहुती से अन्नदान करै ॥ एक रत्ती सोना दे ॥ और सात रस को भोजन करै दूधादिक सात गिनकर ॥ कमती बढती नहीं सात अन्न दे ॥ तीस लड्डू तिल शक्कर के

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इस मंत्र से दान करै

मंत्र

सूर्य्योमेप्रीयतां ॥ विष्णुमूर्त्ति

निरंजनः

और इस मंत्र से समाप्ति

करै ॥

मंत्र

दिवाकरजगन्नाथ प्रभाकरनमो

स्तुते ॥ परिपूर्णकुरुस्वेह माघस्ना

न सुषः पते ॥

माघशुक्ला चौथ को कुन्दपुष्प से शिवजी का पूजन करै ॥ लक्ष्मी मिलै ॥

इति श्रीकालादर्श शास्त्रे माघ उद्यापन

समाप्तम

अथमलमासदान लिख्यते

मलमास में सर्व देवन के उद्धेष से घी गुड के मालपूआ तेतीस २ कांसे के पात्र में रखकर और उसी में सोना घी रखकर ब्राह्मण को दे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जिस स्थान में दे उसको कुरुक्षेत्र समझनों ॥
और जिस काल में दे उसको पर्व समझनों ॥
जिस ब्राह्मण को देना उसको हरि समझना
सब पृथ्वीदान का फल है ॥ इस मंत्र से दे

मंत्र

विष्णुरूपीसहस्त्रांशुः सर्वपाप
प्रणाशनः ॥ अपूपान्नप्रदानेन
ममपापंव्यपोहतु ॥ नारायण
जगद्बीज भास्करप्रतिरूपक ॥
व्रतेनानेनपुत्रांश्च संपदंचापि
वर्द्धय ॥ यस्यहस्तेगदाचक्रं ग
रुडोयस्यवाहनं ॥ शंखःकरत
लेयस्य समेविष्णुः प्रसीदतु ॥
कलाकाष्टादिरूपेण निमेषघ
टिकादिना ॥ योवंचयतिभूतानि
तस्मैकालात्मनेनमः ॥ कुरुक्षेत्र
मयंदेशः कालःपर्वद्विजोहरिः

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पृथ्वीसमामिदंदानं गृहाणपुरुषो
त्तमः ॥ मलानांचाविशुद्ध्यर्थं त
वदास्यामिभास्करः ॥
इतिहेमाद्रिशास्त्रे

अथबाराहसंक्रान्तिदान

मेष की संक्रान्ति में मेंढ़ा दान करै ॥ महाफ
ल होता है ॥ वृष की में गोदान ॥ मिथु-
न की में वस्त्रदान अन्नदान और सवारीदा
न करै ॥ कर्क की संक्रान्ति में घृत धेनु
दान ॥ सिंह की में सोना छत्र दान ॥ क
न्या में वस्त्र और मकान दान ॥ तुला की
में अन्न और गोरस दूधादिक दान ॥ वृश्चि
क में दीपदान करै ॥ धन की में वस्त्र स
वारी दान ॥ मकर में लकड़ी अग्निदान
कुंभ में गौ और जल और घास दान ॥ मी
न की में पुष्पन की अच्छी २ माला दान
करै ॥ यज्ञ के समान दान है ॥ आपस्य

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

स्भत्रऋषिनेकहा है ॥

इति

उत्तरायण सूर्य्य होयं ॥ जब तीन दिन उप
वास करै ॥ स्नान कर सूर्य्य का पूजन करै
इसी माफिक दक्षिणायन होयं जब करै ॥
सर्व पाप से मुक्त होवै ॥ सूर्य्य चंद्रग्रहण
में दिन रात उपवास करै ॥ सर्व पापों से
छूटै ॥

पृथ्वीचंद्रोदय में कहा है

चैत्र में इस मंत्र से अच्छे मुहूर्त्त में प्याऊ बै
ठावै

मंत्र

प्रपेयंसर्वसामान्याद्भूतेभ्यः प्रति
पादिताअस्याः प्रदानात्पितर
स्तृप्यंतुहिपितामहा ॥

अथपर्वतदान

नारद जी पूछते हैं ॥ शिवजी कहते हैं ॥ मं

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

डप बनवावे चार कोने का चार दरवाज़े रक्खे
गौ के गोबर से लिपवावै ॥ चारों कोणों में
कुशा बिछावे ॥ और बीच में बिछावे ॥
बीच में मेरु पर्वत बनावे ॥ चांवलों का अ
थवा गेंहूं का उत्तम हज़ार मन का मध्यम
पांच सौ मन का ॥ कनिष्ट तीन सौ मन
का ॥ और जिसकी जैसी श्रद्धा होवे और
चारों कोनों में छोटे २ बनवावे ॥ बीचवा
रे के चौथाई भाग के इन चारों का नाम॥
एक वैभ्राज पूर्व की तरफ़ विपुलाचल ॥
दक्षिण के तरफ़ सुपार्श्व ॥ पश्चिम के तर
फ मंदराचल ॥ उत्तर में गंधमादन ॥ अब
इनको पर्वतों के माफिक बनावे ॥ तीन सो
ने के वृक्ष लगावे ॥ मेरु में पूर्व की तरफ़
मोती रक्खे ॥ दक्षिण के कोणे में फूल ॥
पश्चिम में केसर ॥ जगह जगह चंदन र-
क्खे ॥ और अनेक तरह की लता लगावे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सफ़ेद पत्थर धेरै ॥ और विष्णु ब्रह्मा शिव सूर्य्य ॥ ये चारों सोने के बनवावे ॥ पर्वत के ऊपर बैठावे ॥ और पर्वतों में ऋषीन की गुफा होती हैं सो भी बनवावै ॥ चांदी के चार शिखर बनवावे ॥ पौंडेन के वांस लगावै चारों तरफ़ घी के झरना ॥ पूर्ब की तरफ़ सफ़ेद वस्त्र के बादल ॥ और दक्षिण की तरफ़ पीले ॥ पश्चिम में चित्रविचित्र वस्त्र के ॥ उत्तर की तरफ़ लाल वस्त्र के बादल बनावै चांदी के लोकपाल ॥ सूर्य्य चन्द्रमा अग्नि वायु वरुण कुवेर इन्द्र ये लोकपाल पर्वत पर बैठावे ॥ और चारोंतरफ़नरसलकावन बनवावें ॥ पानी की सरोवर ॥ अच्छी २ फूलों की माला से शोभित करै ॥ सफ़ेद चांदनी लगावै ॥ और अनेक फल धरै ॥ ऐसे पांचों बनावै ॥ और एक कदंव का पेड़ सोने का पर्वत पर रक्खै ॥ सोने का कामदेव

उत्तर की तरफ जो पर्वत है उसके ऊपर सफेद कपड़े की मानसरोवर बनावै ॥ चांदी की हंस वैठावै ॥ और कुवेर को बैठावै ॥ पश्चिम के पर्वत पर सेंधानोन रक्खै ॥ सोने का पीपर चांदी के फूल दही को सरोवर वस्त्र से ढांक दे ॥ और उत्तर के पर्वत पर सोने का बड़ सोने की गौ ॥ दक्षिण के पर्वत पर सहत की सरोवर ॥ और चांदनी में सूर्य्य का चिन्ह होवै ॥ और चार वेदी बनाकर होम करावै ॥ वेदी एक हाथ की और पर्वतों का आवाहन करै पांचोंन को हाथ जोड़कर मेरे ऊपर कृपाकर अपने २ स्थान पर आकर विराजिये ऐसा कहै ॥ पीछे पूजा करै ॥ इस स्तुति को करै ॥ मेरु की ॥

त्वंसर्वदेवगणाधाम निवेदाविरु
द्धमस्य गृहेष्वमरपर्वतनाशाय।

शुक्षेमंविधत्स्व कुरु शांती मनुत्त-
मांच संपूज्यतः परमभक्तिमतासु
पाहि त्वं च भगवानीशो ब्रह्माविं
ष्णु दिवाकरः मूर्त्तामूर्त्तमयंवीज
मतः पाहिसनातनं यस्मात्त्वंलोक
पालानां विश्वमूर्त्तेचमंदिरं रुद्रा
दित्यवसूनांच तस्माच्छान्ति प्र
यच्छमे ॥ यस्मादस्तून्यममरैर्न्ना
रीभिश्च सिरस्तव ॥

अथमंदरकी

यस्माचैत्ररथेनत्त्वं भद्राश्ववर्षेण
च ॥ शोभसेमंदराक्षिप्रमतस्तुष्टि
करोभव ॥

अथगंधमादनकी

यस्माचूड़ामणीजम्बूद्वीपेत्त्वंगंधमा
दनः ॥ गंधर्ववनशोभा वासतः कीर्त्ति
दृढ़ास्तुमे ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथसुपार्श्वकी

यस्मात्त्वंकुरुमालेन विभ्राजकव नेनच ॥ सुपार्श्वराजसेनित्त्य मत: श्रीरक्षयास्तुमे ॥

अथविपुलाचलकी

विपुलाचलयस्मात्त्वं केतुमालेनभ्रा जसे ॥ हिरण्यमयास्वच्छ शिरव तस्मा तुष्टिवरास्तुमे ॥

समाप्तम

ऐसे सभीं की पूजा करें ॥ रात में जागरन करें सवेरे स्नान कर बड़ा पर्वत गुरू कों ॥ छोटे होम करने वारेन कों ॥ इस मंत्र से अन्न पर्वत दे ॥

मंत्र

अन्नंब्रह्मयतोप्रोक्त मन्नंप्राणप्रकी र्त्तिता: ॥ अन्नाद्भवंतिभूतानि जग न्नेवचवर्त्तते ॥ अन्नमेवयतोल क्ष्मी रत्नमेव जनार्द्दन ॥ धान्यपर्व

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तस्रूपेण तस्मात्पाहीनगोतमः ॥

अर्थ

राक २ गौ देन सामर्थ्य होय तो गुरु कों कपिला दे ॥ इसी विधि से सब पर्वत दान करै ॥ इसके दान से सौ मन्वन्तर स्वर्ग वास करै ॥ पीछे चक्रवर्त्ती राजा होवै ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे धान्यपर्वत विधान अध्यायः

अथतिलपर्वत

उत्तम दश मन कौ ॥ मध्यम पांच मन कौ ॥ छोटौ ढाई मन कौ ॥

मंत्र

यस्मान्मधुवधोविष्णो देहस्वेदसमुद्भवः ॥ तिलाकुशाश्च सुधाः तस्माछन्नोभवत्वह ॥ हव्येकव्ये चयस्मा च तिलरावाभिरक्षणं ॥ तस्माडुद्धरशैलेन्द्र तिलाचलन

मोस्तुते ॥

अर्थ

इसके दान से विष्णुलोक कों जाय

अथकपासपर्वत

साठ मन कौ उत्तम ॥ तीस मन कौ मध्यम पांच मन का छोटा ॥ तीन मन का ॥

मंत्र

त्वमेववारणयस्माल्लोकानां मि तिसर्वदा ॥ कार्य्यासाद्रेनमस्तुभ्यं मर्थौंत्विध्वंसनोभवः ॥

॥ अर्थ

इसके दान से शिवलोक कों जाय ॥ एक कल्प पीछें राजा होय ॥

अथ नोन का पर्वत दान

सोलह मन का आठ मन का चार मन का एक मन का श्रद्धा माफिक

मंत्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सौभाग्यरससंयुक्तो यतोयंलवणे
रसः ॥ तदात्मकत्वे च मांपाहि पा
पान्नगोत्तमा ॥ यस्माद्धंतरसाःस
र्वे नोत्कटाल्लवर्णाबिना ॥ प्रियश्च
शिवयोर्न्नित्त्यं तस्माच्छान्ति प्रय
च्छमे ॥ विष्णु देहसमद्भूतं यस्मा
दारोग्यवर्द्धनं ॥ तस्मात्पर्वत रू
पेण पाहिसंसारसागरात् ॥

अर्थ

इसके दान से पार्वती के लोक में बसे एक क
ल्प ॥ पीछे परमगति पावै ॥

अथगुडका पर्वतदान

तीस मन का पंद्रह मन का ॥ पांच मन का ढा
ई मन का ॥ श्रद्धामाफिक ॥

मंत्र

यथादेवेषुविश्वात्मा प्रवरोयंज
नार्द्दनः ॥ सामवेदस्तुवेदानां म

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

हादेवस्तुयोगिनां ॥ प्रणवः सर्वमं
त्राणां नारीणांपार्वतीयथा ॥ तथा
रसानांप्रवरः सदेवंतुरसोगतः ॥ म
मतस्मात्परांलक्ष्मी गुडपर्वतदेहि
वै ॥ यस्मात्सौभाग्यदायित्त्वाध
मस्त्वंगुडपर्वतः ॥ निवासश्चापि
पार्वत्त्या स्तस्माच्छान्ति प्रयच्छ
मे ॥

अर्थ

इसके दान से गौरी के लोक में सौ कल्प वसै
पीछे शाकद्वीप का राजा होय ॥

अथघीकौपर्वतदान

वीस घड़े का उत्तम ॥ दश घडे का मध्यम ॥
पांच घडे का छोटा ॥ जब दे घडों के ऊपर चां
वलों के पात्र भरकर रक्खै ॥ और विधि पह
लें कही है वोह करै ॥

मंत्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

संयोगाद्घृतमुत्पन्नं यस्मादमृततेजसः ॥ तस्माद्घृतत्त्वंविश्वात्माप्रियतांशंकरः ॥ यस्मातेजोमयब्रह्मघृतेतच्चव्यवस्थितं ॥ घृतपर्वतरूपेण तस्मात्त्वंपाहिनोम्बुशं ॥

अर्थ

इसके दान से प्रलय तक शिवलोक में अप्सरों के संग विहार करै ॥

अथ शक्करका पर्वतदान

चौवीस मन का उत्तम ॥ बारह मन का मध्यम छै मन का ॥ तीन मन का ॥

मंत्र

सौभाग्यमृतसारोयं सर्वतः शर्करायुतः ॥ तस्मादानंदकारीत्त्वं भवशैलेन्द्र सर्वदा ॥ अमृतांपिवतांपेतु निपेतुयोसि महाशैल भवशीकरादेवानां तत्समत्त्योयंपा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

हिनः शर्कराचल ॥ मनोभवधनु
मध्या दुध्धृताशर्करायुतः ॥ तन्म
योसिमहाशैल पाहिसंसारसाग
रात् ॥

अर्थ

इसके दान से ब्रह्मलोक कों जाय ॥ पीछे मो
क्ष पावै ॥ ये सात पर्वत कहे ॥ इसका पाठ क
रै ॥ स्वर्ग को जाय ॥ खोटे स्वप्न नाश होयं ॥
और कों सुनावै ॥ उस पर देवता ऋषि प्रसन्न
होते हैं ॥ क्योंकर प्रसन्न होते हैं ॥ धर्म्म क
र्म्म की बात सुनेगा जब धर्म्म में मन होगा ॥
बिना शास्त्र का प्राणी अंधा है ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तपर्वताविधानो
नामअध्यायः
श्रीदामोदरदासेण कृता भाषायं
समाप्तम्

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथ मृगछालादानविधि लिख्यते

वैशाख की पूनों को कार्त्तिक की अषाढ की अथवा ग्रहण में अथवा द्वादशी उत्तरायण में किसी महीना की होय ॥ इन पर्वन में दै ॥ गौ के गोवर से लीपकर ॥ उस सब में सूत फैलावे ॥ इस पर मृगछाला विछावै ॥ सावित मृगछाला होय ॥ सींग पूंछ पैर चारों और कान ऐसा मृगछाला कारी होय ॥ अब इसके चांदी के दांत सोने के सींग बनवावै ॥ नार में मोती और तिल रक्खै और तिल की चोटी कारे वस्त्र से ढांक दे ॥ सोने की नाभि सुगंधी वस्तु के नेत्र केसर कस्तूरी के चार कांशे के पात्र रक्खै ॥ इन में एक में दूध भरै ॥ एक में दही ॥ एक मे शहत ॥ चारों तरफ रक्खै ॥ इस मंत्र से कांसे के पात्र को दे ॥

मंत्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

यानिपापान्यकामानि कामोत्या
नि कृतानिच ॥ कांस्यपात्रप्रदा
नेन तानिनश्यंतु मेसदा ॥

अर्थ

मुहं के तरफ़ एक मिट्टी का घड़ा जल से भर
कर रक्खे ॥ घड़े पर चम्पा की डाल रक्खे ॥
और चार पात्र और रक्खे ॥ सोने का ॥ चांदी
का ॥ तांवे का ॥ लोहे का ॥ लोहे के पात्र
में तिल भर वांये पैर के पास रक्खे ॥ इस मं
त्र से लोहे के पात्र को दे ॥

मंत्र

यानिकानिचपापानि मयाल्लोभा
त्कृतानिच ॥ लोहपात्रादिदाने
न तानिनश्यंतु ममाद्यवै ॥

अर्थ

अव तांवे के पात्र में शहत भरकर दहिने पैर
पर रक्खै और इस मंत्र से तांवे के पात्र को दे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र

परापवादपैश्शून्य प्रष्टमांसस्यभक्ष
णात् ॥ तन्नोत्थितं च मेपापं ताम्रपा
त्र प्रणश्यतु ॥

अर्थ

अब ऊपर के पैर हैं ॥ मुहं की तरफ़ बांये तर
फ चांदी का पात्र दहिने सोने का सामर्थ्य न
होय तो तांबे के रक्खै ॥

इस मंत्र से चांदी का दे

कन्यान्नृतंगवाश्चैव परदाराभि
मर्षणा ॥ रौप्यपात्रप्रदानेन क्षिप्रंना
शंप्रयातुमे ॥

सोनेकामंत्र

जन्मजन्मसहस्रेषु कृतंपापंकुबु
द्धना ॥ सुवर्णपात्रदानातु नाशयाशु
जनार्द्दन ॥

अर्थ

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ऐसे पात्र दे और महादेवजी का पूजन करै अब मृगछाला देने का मंत्र ॥ ब्राह्मण को पूंछ पकड़ कर इस मंत्र से दे ॥

मंत्र

कर्त्ताकृष्णोविभुर्देवः कृष्णाजिन धरस्तथा ॥ त्वद्दानहतपापस्यप्री यतांमेननमोनमः ॥ त्रयस्त्रिंशत्सु राणांत्वमाधारत्वेव्यवस्थितः ॥ कृष्णोसिमूर्त्तिमान्साक्षात्कृष्णा जिननमोस्तुते वृषध्वजः प्रीय-ताम्

अर्थ

ऐसे देकर मिट्टी के घड़े में जो जल है उस से आप स्नान करै ॥ इस मंत्र से ॥

आप्याय

इस घड़े को और एक वस्त्र जहां चार गली होंय वहां रखवादे ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्लोक

समग्रस्यभूमिदानस्य फलंप्राप्नोति
नसंशयः ॥ सर्वलोकेश्चरतिका
मचारिविहंगवत् ॥

अर्थ

जहां से सूर्य्य उदय होते हैं और अस्त होते हैं सब पृथ्वीदान का फल होता है ॥ महाप्रलय तक स्वर्ग वास होय ॥ और सब लोकनमें पंक्षी के माफिक विचरै ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे कृष्णाजिन प्रदानं
नाम अध्यायः
श्रीदामोदर दासेण कृता भाषायं ॥

अथ दशतरह की धनुदान

कारे मृग का मृगछाला चार हाथ का सावित सींगादिक सब होयं ॥ ज़मीन गौ के गोवर से लीपै कुशा विछावै ॥ सिर पूर्व को करै दो मन की गौ एक मन का वत्सा ॥ जिस्की

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जैसी श्रद्धा होवै ॥ गौ को कैसा आकार बना
वै ॥ सीप के कान ॥ दो पौंडिन के पैर ॥ नेत्र
न में मोती सफेद सूत की नसें ॥ सब में
सूत लपेट दे ॥ नार के नीचें कम्बल सफ़े
द रक्खे ॥ तांबे के गाल और पुट्ठे ॥ चमर
की पूंछ ॥ और इसी के रोम ॥ सोने के सीं
ग रूपे के खुर ॥ लोहे के नख फलन की
नाक ॥ कांशे की दोहनी ॥ ऐसें बनाकर पू
जन करै ॥ छोटे मृगछाला को वत्सा बना
वै ॥ इसी माफिक वत्सा को मुख उत्तर कों
करै ॥ एक मन का अथवा दश सेर का श्र
द्धा के माफिक ॥ जिस धेनु का मंत्र नहीं है
इस मंत्र से दे ॥

मंत्र

यालक्ष्मीः सर्वभूतानां याचदेवे
ष्वव्वस्थिता ॥ धेनुरूपेणसादेवि
ममपापंव्यपोहतु ॥ १ ॥ विष्णो

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वंदासियालक्ष्मीः स्वाहायाचवि
भावसौ ॥ चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या
साधेनुर्वरदास्तुमे ॥ २ ॥ स्वधात्वं
पितृमुख्यानां स्वाहायज्ञभुजांय
तः ॥ सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छां
तिंप्रयच्छमे ॥

अर्थ

गुडधेनु घृतधेनु तिलधेनु दूध की धेनु । श
हत की धेनु शक्कर की धेनु दही की धेनु
सोने की धेनु ॥ सब यज्ञन के फल की देने
वाली हैं ॥ और सब पापन के नाशनेवाली
हैं ॥ मुक्ति देनेवाली हैं ॥ पर्वकाल में औरै
सब धेनु देने की विधि यैई है ॥

इति श्रीपद्मपुराणे सृष्टीखण्डे भीष्म
पुलस्त सम्वादे धेनुदानविधि
अध्यायः

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अषाढ़ की पूनों को घृतधेनुदान दे तो वरुण लोक को जाय॥ श्रावण मास में श्रवण नक्षत्र में गुडधेनु दही सहित दे ॥ तो शिवलोक कों जाय ॥ वैशाख की पूनों को जलधेनु दे कोरे घडन में जैसी विधि लिखी है मृगछाला पर रखकर दे तो ॥ ब्रह्मलोक कों जाय ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे धेनुदान महात्म्य अध्यायः

तिलधेनु का बड़ा महात्म्य है ॥ जिस विधि से कही मृगछाला में ॥ उसी विधि से दे ॥ तिलधेनु दो मन की ॥ वत्सा चार पंसेरी का फलन के दांत गुड की जीभ ॥ नाक में सुगंधी वस्तु रक्खे ॥ वस्त्र से ढांक दे पंच रत्न रक्खे॥ अनेक फल फूल दूर्वा कुशा तुलसी इनसे पूजन करे॥ कुशा हाथ में लेकर जप पाठ आदिक जो कुछ करे कोटिगुणा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

फल होय ॥

अथतिलधेनुमंत्र

अन्नंमेजायतांसद्यः पानंसपरसा
स्तया ॥ कामान्संपादयास्माकं
तिलधेनोद्विजार्पिता ॥ गृह्णामि
देवित्वांभक्त्या कुटुंबार्थेविशे
षतः ॥ देहिकामानिमान्सर्वास्ति
लधेनोनमोस्तुते ॥

श्लोक

चतुर्भिः सेतुकाभिस्तु प्रस्थएकः
प्रकीर्त्तितः ॥ तैषोडशैः भवेद्धेनु
चतुर्भिर्वत्सकोभवेत् ॥

अर्थ

वाराह पुराण में सोलह सेर की गौ कही चार
सेर का वत्सा कहा ॥

अथजलधेनु

जलपूर्णसुगंधंतु कर्पूरागुरुचंदनै

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वासितंगंधतोयेन तद्धेनुंपरिकल्प येत् ॥

अर्थ

जल के घडा सुगंधि डालकर कर्पूर चंदन पुष्प ऐसें सुगंधी जल कर मृगछाला पर गौ कल्पना करै ॥ जैसी विधि लिखी है जलधेनु के कुशा के रोम पांचों रत्न उनमें डालै ॥

श्लोक

एकंघृतमयंपात्रं द्वितीयंदधिपूरितं ॥ तृतीयंमधुनाचैव चातुर्थंशर्कराव्रतं ॥

अर्थ

एक घी को ॥ एक दही को ॥ शहत को ॥ शक्कर को ॥ ये चार पात्र भरकर रक्खै ॥ जलधेनु देकर आप उस दिन जल पीकर अथवा दूध पीकर रहजाय ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथअन्नधेनु

धान्यधेनु दश मन की पांच मन की ढाई मन की बीच में रत्न छिपा दे ॥

देनेकामंत्र

भवविप्रमहाभाग वेदवेदांगपारग ॥ गतामम्मोपकाराय गृह्णीष्वत्वं द्विजोत्तम ॥ प्रीयतांममदेवेशो भगवान्मधुसूदनः ॥ त्वमेवलक्ष्मी गोविन्दे स्वाहायाचविभावसौ ॥ शक्रेसचीतिविख्याता शिवेगौरीतिसंस्थिता ॥ गायत्रीब्रह्मणे प्रोक्ता ज्योत्स्नाचन्द्रेरवौप्रभा ॥ बुद्धिर्बृहस्पतौख्याता मेधामुनिषु सत्तमैः ॥ तस्मात्सर्वमैदेवी धान्यरूपेणसंस्थित ॥

अर्थ

इस मंत्र को बोलकर अन्नधेनु दे शिवलोक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

को जाय पीछे राजा होय ॥

इति श्रीवाराहपुराणे श्वेतोपाख्याने
धान्यधेनु महात्म्य अध्यायः

श्लोक

दाताच दापकश्चैव प्रतिग्राही
चयोद्विजः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो
विष्णुलोकंचगच्छति ॥

अर्थ

दाता देलानेवाला लेनेवाला तीनों विष्णु
लोक कों जायंगे ॥

श्लोक

दाताचग्राहकोवाथ रसाहार
सभोजनैः ॥ सोमपानंसमंतस्य
सर्वक्रतुफलंभवेत ॥

अर्थ

रसधेनु देकर उस दिन दाता लेनेवाला दोनों
पोंडेन का रस पीकर रहैं ॥ यज्ञ काफलहोय

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सोमपान पीने का फल होय ॥

श्लोक

यइदंपठतेनित्यं शृणुयाद्वाथभ
क्तितः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो वि
ष्णुलोकेमहीयते ॥

अर्थ

इसका पाठ करै और भक्ति से सुनें सब पाप
से छूटकर विष्णुलोक कों जाय ॥

अथगुडधेनुमंत्र

वाचाकृतंकर्मकृतं मनसायाद्विचिं
तितं ॥ मानः कूटंतुलाकूलंकन्या
नृतगवानृतं ॥ सर्वंनाशयतेपापं
गुडधेनुर्द्विजार्पितं ॥

श्लोक

दीयमानांप्र पश्यन्ति तेपियांतिपर
मागतिं ॥

अर्थ

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

देते वक्त जो देखते हैं वो भी परमपद को जाते हैं ॥ चार आदमियों से चलै इतने गुड की अथवा दो आदमियों से एक आदमी श्रद्धा माफिक सात धान पर रक्खै ॥ वस्त्र से ढंक दे ॥ माखन के यन ॥

अथनोनकी

सोलह सेर नोंन की धेनु चार सेर का वत्सा

अथदेनेकामंत्र

इमांग्नह्याणभोविप्र धेनुंकामदु घांशुभं ॥ भरखकामैर्नादेवि रु द्ररूपेनमोस्तुते ॥ रसज्ञासर्वभूता नां सर्वदेवनमस्कृता ॥ कामंका मदुघेकामां लवणधेनुनमोस्तुते

अथकपासकी

कपास की धेनु चार आदमी के बोझे की तीन दो श्रद्धा माफिक और सब बिधि पह·

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लें लिखा है ॥ उस माफिक करै ॥

इति श्रीदामोदरदासेणकृताभाषायं
इति श्रीवाराहपुराणे धेनुदान स
माप्तम्

अथनक्षत्रदान

युधिष्टिरउवाच

श्लोक

श्रुतंमेभवतोवाक्य मन्नदानस्ययो
विधिः॥ नक्षत्रयोगस्येदानीं दान
कल्पंब्रवीहिमे ॥

अर्थ

युधिष्टिर भीष्मजी से कहते हैं ॥ कि अन्न दान की विधि आपके मुख से सुनीं ॥ नक्षत्रदान की कहिये॥ नक्षत्रन में दान का ज्यादा महात्म्य है ॥ भीष्मजी कहते हैं ॥ पहला इतिहास कहते हैं ॥ नारदजी का और देवकी का ॥ एक समय नारदजी श्रीकृष्ण

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

के दर्शन करनें को द्वारिका में आये ॥ सबने नारदजी का पूजन किया ॥ देवकी पूंछती भई ॥ कि महाराज नक्षत्रों में क्या दान करना चाहिये ॥ सो कहियें ॥ ऐसें देवकी नें पूंछे तब नारदजी विधि सहित कहते भए सो हे युधिष्ठिर सुनों ॥

कृतिकानक्षत्रमें

खीर घी से साधू और ब्राह्मणों को खूब भोजन करावे ॥ अच्छे लोकन कों जायगी ॥ १

रोहिणीनक्षत्रमें

मृग के मांस से और घी और अन्न और दूध और जल ब्राह्मण को दे ॥ अथवा भोजन करावै ॥ कुछ फल की चाहना से न करै ॥ इस लोक में मेरा कुछ मनोर्थ सिद्धि होय ॥ परलोक के वास्ते दे ॥ २ ॥

मृगासिरानक्षत्रमें

दूध देती हुई वत्सा सहित गोदान करै ॥ ३

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

म लोक में स्वर्ग को देनेवाला जायगा ॥

आर्द्रानक्षत्रमें

चांवल तिल चूरा मिलाकर दे ॥ नर्क से त रैगा ॥ छुरी की धारा के समान जो नर्क के पर्वत तिन से तरैगा ॥ ३॥

पुनर्वसूनक्षत्रमें

मालपूआ भोजन करावै ॥ अथवा सामिग्री दान करदे ॥ हे बड़े शोभावाली देवकी इ स दान का देनेवाला बड़ा रूपवान और ब ड़ा यशवान और धन धान्य कर पूरित और अच्छा कुल ऐसी जगह जन्म लेगा ॥ ४॥

पुष्यनक्षत्रमें

सोना दान या तो कुछ आभूषण या फक्त सोना दे ॥ देनेवाला उन लोकन को जा-ता है ॥ जहां जाकर फिर जन्म नहीं लेता चन्द्रमा के माफिक प्रकाशता है ॥ ५॥

अश्लेषानक्षत्रमें

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

चांदीदान वैलदान ॥ देनेवाला सब भय से छूटकर प्रलय तक स्वर्गवास करेगा ॥ ६॥

मघानक्षत्रमें

तिल का खेत दान करै ॥ जब पकजावेऔर खेत में बड़े २ पेड होजावैं ॥ देनेवाला पुत्र और धन और पशुन से खुश रहैगा ॥ परलोक में सुख भोगेगा ॥ ७॥

फाल्गुणीनक्षत्रमें

अच्छे २ भोजन करावे ॥ मलाई सहित तो बडा भागवाला होगा ॥ ८॥

उत्तरानक्षत्रमें

पुराने चांवल दूध में बनावै खूब घी बूरा डाले मोहन भोग के माफिक बनावै इस पदार्थ का नाम खिराना है ॥ ब्राह्मण भोजन करावे ॥ अथवा सामिग्री दे ॥ देनेवाला स्वर्ग को जाय ॥ जो कुछ दान देना होय वो उत्तरा नक्षत्र में दे ॥ जो २ दान उत्तरा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

में देगा बडा फल होगा ॥ उत्तरा का बड़ा म
हात्म्य है ॥ इस वास्ते जो कुछ देना होय
उत्तरा में दे ॥९॥

हस्तिनक्षत्रमें

हाथी रथ रथ में चार हाथी लगाकर दान क
रै ॥ हाथा की सामर्थ्य नहोवै तो चांदी के
बनवा लेवै ॥ परमलोक जिन लोकन में
अच्छे २ भोग हैं वहां जायगा ॥१०॥

चित्रानक्षत्रमें

वैल और सुगन्धी वस्तु दान करै अप्सरन
के संग नंदनबन में बिहार करै ॥११॥

स्वातिनक्षत्रमें

जो धन अपने को प्यारा होवै उसका दान
करै ॥ शुभलोकन में जाय ॥१२॥

विशाषानक्षत्रमें

गाडी में चलने माफिक वैल गौ दान करै ॥
और गाडी में सब सामिग्री अन्न वस्त्रादिक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

भरकर और बैल जोड़कर गाडी दान करै। विशाखा नक्षत्र में इतना दान करै ॥ उस्के ऊपर पित्रीश्वर और देवता खुश होते हैं॥ परलोक में अनन्त फल मिलेगा ॥ नर्क को नहीं जायगा ॥ स्वर्गवास होवै ॥ इस दान के करने से जिस तरह कहा है ॥ इस तरह जो गाडी दान करैगा जो रकामना करैगा वो मिलेगा नर्क के क्लेश नहीं भोगेगा ॥१३

अनुराधानक्षत्रमें

तंबू कनात दान करै ॥ चांदनी छत्री देने से स्वर्गवास होयगा ॥१४

ज्येष्ठानक्षत्रमें

चूका का शाक जड़ सहित देवै परलोक में देनेवाले को अच्छी गती मिलेगी ॥१५

मूलनक्षत्रमें

कंद शाकरकंद दिक दान और अनेक फल दान देने से वांछित गति पावै ॥ पित्र देव

राज़ी होवैं ॥१६

पूर्वाषाढनक्षत्रमें

दही पात्र भरकर दान करै ॥ अच्छे वेदपाठी धनी ब्राह्मण के जन्म ले ॥ दाता बड़ा धर्मात्मा होगा ॥१७

उत्तराषाढमें

जल पात्र भरकर घी शहद और शहद के लड्डू दान करै ॥ और शर्बत के करुवा भरकर दे ॥ सब कामना सिद्ध होवैं ॥१८

अभिजितनक्षत्रमें

दूध घी शहत मिलाकर दान करै सदा धर्म में मन रहै ॥ अन्त में स्वर्ग पावै ॥१९

श्रवणनक्षत्रमें

दुशाला और जो वस्त्र दान देना होय श्रवण नक्षत्र में दे ॥ दाता श्वेत विमान में बैठकर स्वर्ग जाय ॥२०

धनिष्ठानक्षत्रमें

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

बैल और रथ दान करै ॥ दाता को परलो
क में धन की और वस्त्रन की राशि मिलै
और सुखी रहै ॥ २१

शतभिषानक्षत्रमें

चोवा और अर्गजा और अगर चंदन दान करै
अप्सरन के साथ सुगन्धी स्थान में देनेवाला
बिहार करै ॥ २२

पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें

रमास दान करै इसके दान से सब भोगन से
इस लोक में सुखी रहेगा ॥ २३

उत्तराभाद्रपदनक्षत्रमें

बकरा का मांस दे ॥ पित्री सुखी होते हैं ॥
मरकर सुख भोगता है ॥ २४

रेवतीनक्षत्रमें

कांशे की दोहनी सहित गौदान करै ॥ देनेवा
ले के सामने परलोक में गौ आती हैं ॥ २५

अश्विनीनक्षत्रमें

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

घोड़ा का रथ दान करै ॥ दाता ऐसे घर में ज
न्म लेगा जहां हाथी घोडा रथ होंयगे ॥ २६

भरनीनक्षत्रमें

तिल धेनु दान करै ॥ दाता को बहुत गौ मि
लैं ॥ और बहुत यश होवे ॥ जितने कपड़े
में गौ ढकि जाय उस वस्त्र को बिछाकर ए
क मन भर तिल कपडे में फैलाकर गौ बना
वे ॥ जो मृगछाला नमिलै ॥ मृगछाला का
ज्यादा महात्म्य है ॥ भीष्मजी युधिष्ठिरजी से
कहते हैं ॥ नारदजी ने देवकी से इस प्रका
र नक्षत्र दान विधि कही देवकी अपनी बहू
वेटीन से कहती भई ॥ २७

श्लोक

यशोदातर्जितकंपी मायारुदित
शोभनः ॥ दामोदरोप्रमेयात्माद
यालुर्भक्तवत्सलः ॥

अस्यादासोहं

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अर्थ

स्त्री कांछ लगाकर दान पूजा तीर्थ में स्नान बिना लांग लगाये नकरै ॥

इति श्रीमहाभारते अनुशासनीकेपर्व
नी नक्षत्रदान समाप्तम्
श्रीदामोदरदासेण कृताभाषायं

अथश्राद्ध लिख्यते

श्लोक

ब्राह्मणैरभ्यनज्ञातः कामंतमपिभो
जयेत ॥ योगिनोविविधैरूपैर्नराणां
मुपकारिणः ॥

अर्थ

श्राद्धकाल में अपूर्वी बिनाजाना पूंछा ब्राह्मण अन्न कामना से आवै ॥ उसको भोजन करावै ॥ जो भोजन करै ॥ योगीराज ऋषिलोग मनुष्यन के कल्याण करने को अनेक रूप धारण कर बिचरते हैं ॥

श्लोक

भ्रमति पृथ्वींताम विज्ञातस्व
रूपिणः ॥ तस्मादभ्यर्चयेत्प्राप्तं
श्राद्धकालेतिथिंबुधः ॥

अर्थ

छिपेहुए पृथ्वी में बिचरते हैं ॥ ऐसा जान कर जो अपूर्वी आवै ॥ उसकी खातिर करै अतिथि से ज्यादा गृहस्थ कों और कर्म नहीं है ॥ स्वर्ग मोक्ष के वास्तें महाभारत में कहा है ॥ जिसके घर से अतिथि खाली जाता है ॥ वो अतिथि गृहस्थ का पुण्य लेजाता है ॥ अपना पाप देजाता है ॥

श्लोक

मग्नोथजान्हवीतोय इत्याथाह
सुतोममशूद्रस्साधुः कलि-
स्साधुरित्त्येवं श्रणूतांवचः तेषां
मुनीनां भूयश्च ममज्जसनदी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जले ॥

अर्थ

घोर कली आया जानकर सप्तऋषि वेदव्यास के पास गये ॥ कली के शूद्र के स्त्रीन के धर्म्म पूंछनें ॥ ऋषि जिस कारण आये वो वेदव्यास जानगये ॥ गंगाजी में डूबकर मेरा बेटा पारासरजी कहते हैं ॥ मैत्रे से शूद्र साधु कली साधु मुनीन कौं सुनाकर बोले ॥ व्यासजी तीनों वर्ण की सेवा से शूद्र स्वर्ग जाय ॥ इससे शूद्र साधु कहा ॥

श्लोक

निमग्नश्चसमुत्थाय पुनःप्राह
महामुनिः ॥ योषितः साधुधन्या
स्ता स्ताभ्योधन्य तरोस्तिकः ॥

अर्थ

फिर डूबकर उछले और बोले स्त्री साधु स्त्रीन से ज्यादा और धन्यकौन है ॥ स्त्रीन की

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वडाई विशेष कीनी ॥ पति सेवा से स्त्री स्व र्ग जाय ॥

व्यासउवाच

श्लोक

यत्कृतेदशभिर्वर्षै स्त्रेतायांहाय
नेनतत् ॥ द्वापरेतच्चमासेन ह्यहो
रात्रेणतत्कलौ ॥

अर्थ

सतयुग में जो तपादिक से दश वर्ष में फल होता ॥ वो त्रेता में वर्षदिन में ॥ द्वापर में एक महीना में ॥ कलयुग में एक दिनरात में ॥ एकादशी आदिक के व्रत से फल होता है ॥ इससें कली साधु कहा ॥

श्लोक

तपसोब्रह्मचर्यस्य जपादेश्चफलं
द्विजाः ॥ प्राप्नोतिपुरुषस्तेन कलि
स्साध्वितिभाषतम ॥

अर्थ

मथुरा में सावधान होकर अच्युत का पूज
न करै ॥ अश्वमेध यज्ञ का फल अखंडि
त पावै ॥

श्लोक

कच्चिदस्मात कुलेजातः कालिं
दी सलिलाप्लुतः ॥ अर्चयिष्य
तिगोविन्दं मथुरायामुपोषितः

अर्थ

पित्रीश्वर कहते हैं ॥ हमारे कुल में कोई
ऐसा होता कि कालिन्दी में स्नान कर गो
विन्द का पूजन करता ॥ उपवास करि कें
मथुरा में पिंड करता ॥

श्लोक

ज्येष्ठामूलेसितेपक्षे कैनैवंवय
मप्युत ॥ परामृद्धिमवाप्स्यामस्ता
रितास्स्वकुलोद्भवैः ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अर्थ

ज्येष्ठ महीना में शुक्लपक्ष में मूल नक्षत्र में पिण्ड दे ॥ पित्री कहते हैं ॥ हम परमगति को जावें ॥ उसने सब कुल तारे ॥ शुक्लपक्ष में सप्तमी रविवार होवे ॥ जो कुछ करै ॥ कोटिगुणा फल होवे ॥

श्लोक

ज्येष्ठाम्मूलेसितेपक्षे समभ्यर्च्च्यज नार्द्दनम् ॥ धन्यानांकुलजःपिंडा न् यमुनायांप्रदास्यति ॥

अर्थ

ज्येष्ठमास मूल नक्षत्र में विष्णु का पूजन करै ॥ पिण्ड दे ॥ पित्री कहते हैं ॥ धन्य है हमारे कुल में जो यमुना में पिण्ड दे ॥

श्लोक

ध्यायनकृतेयजनयज्ञै स्त्रेतायां द्वापरे ॥ चयदाप्नोति तदाप्नोतिक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लौसंकीर्त्त्यकेशवम् ॥

अर्थ

सतयुग में जो फल ध्यान से होता था ॥ त्रेता में जो फल यज्ञ से होता था ॥ द्वापर में पूजा से होता वो फल कलयुग में केशव के नाम से होता है ॥ जप यज्ञ कलि में है ॥

इति श्रीबिष्णुपुराणेश्रीदामोदरदासेण कृताभाषायं

श्लोक

कार्त्तिकीपूर्णिमायांच रासेवृन्दा वनेचमां ॥ प्रणम्यराधाप्रतिमांक रोतिजन्मखण्डनं ॥

अर्थ

कार्त्तिक की पूर्नो को रास किया है ॥ इसस बब से वृन्दाबन में जाकर राधाकृष्ण कीप्र तिमा को प्रणाम कर फिर जन्म नहीं ले ॥

श्लोक

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

दोलायमानंगोविन्दं पुण्येवृंदाब
नेचमां ॥ दृष्ट्वासंपूज्यनत्त्वाच करो
तिजन्मरखण्डनं ॥

अर्थ

हिंडोला में गोविन्द को झूलते हुए देखै ॥ वृन्दावन में पूजन करै ॥ नमस्कार करै फिर जन्म नहीं लेय ॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्त्त
पुराणे

अथपतिमंत्र

ॐनमः कान्तायशान्ताय सर्वदेव
त्रयायस्वाहा ॥

अर्थ

इस मंत्र से स्त्री पति का पूजन करैं ॥ षोडशो प्रकार और इस स्तुति को करैं ॥ सब स्त्री अपने २ पतीन की ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ब्राह्मण महामण्डल कश्मीर
नाड़----
दिनाङ्क ----

अथपतिस्तुति

ॐनमः कान्तायशान्ताय च शिवच
न्द्रस्वरूपिणेनमः ॥ शान्तायदा
न्ताय सर्वदेवाश्रयाय च ॥ नमो
ब्रह्मस्वरूपाय सतीप्राणप्रियायच
नमस्याय च पूज्याय हृदाधाराय
ते नमः ॥ पंचप्राणाय देवाय चक्षु
षस्तारकायच ॥ ज्ञानाधाराय प
त्नीनां परमानन्दरूपिणे ॥ पति
र्विष्णुः पतिर्ब्रह्मा पतिरेवमहेश्वर
पतिश्चानिर्गुणाधारो ब्रह्मरूपनमो
स्तुते ॥ क्षमस्वभगवन्दोषं
ऽज्ञानं कृतंचयत् ॥ पत्नीवन्धोद
यासिन्धो दासीदोषंक्षमस्वच ॥

इतिब्रह्मवैवर्त्तपुराणे

अर्थ

इस स्तुती कों लक्ष्मीजी ने की है ॥ पार्वती

ने सरस्वती ने पृथ्वी ने गंगाजी ने सावित्रीने और ऋषिन की स्त्रीन ने और देवतन कीस्त्रीन नें इन सभों नें की है ॥ श्रीकृष्ण नन्दजी से कहते हैं ॥ इस स्तुती के करने से स्त्रीन कों पुरुष कौ सर्वसुख होवे ॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्त्त पुराणे श्रीकृष्णानंद संवादे आशीतितमो ऽध्यायः

अथशनीव्रत

स्मरिष्यंतीहयेचत्त्वं पिप्पलादेतिमानवः॥ तेषांशनैश्चरकृतापीडानप्रभविष्यति॥

अर्थ

शनिश्चर की प्रतिमां दान करे ॥ एक वक्त पिप्पलाद ऋषी के ऊपर शनिश्चर आया ॥ पिप्पलाद ने आकाश से शनी को गेरदिया ॥ ब्रह्मा के कहने से फिर शनी को स्थान दिया और यह बात कही कि पिप्पलाद और शनी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

का जो स्मर्ण करेंगे ॥ उनको शनी पीडा न
हीं होयगी ॥ लोहे के घडे में तिल का तेल
भरकर कम्बर विछाय कर बैठावें ॥ शनी
को कालावस्त्र उढ़ाय दे ॥ और कारे फूल
और कारा धूप तेल लगाकर स्नान करै ॥
शनी के शनी घड़ा ब्राह्मण को दे ॥ कारी
गौ दक्षिणा में दे और इस स्तुति को करै॥

श्लोक

कालंनीलांजनंद्यस्तं नीलवर्ण
समस्तजं ॥ छायामार्त्तण्डसंस्
त नमस्यामिशनैश्चरं ॥ नमो
र्कपुत्रायशनैश्चराय नीहारवर्ण
जनरोचकाय श्रुत्वारहस्यं भव
कामदश्च फलप्रदोमेभवसूर्य
पुत्र नमोस्तुरुद्रराजाय कृतदेहा
यवैनमः शनैश्चरायक्रूराय श्र
द्धबुद्धिप्रदायने यशाभिनामाभि

स्तौति तस्यतुष्टोभवाम्यहं मदीयं
तुभ्यंतथ्य स्वप्नेपि न भविष्यति ॥
इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे शनैश्चर
शांतिव्रतनाम अध्यायः

अथनक्षत्रपूजन

चैत्रमास में आरंभ करै स्नान करिकें एक २ नक्षत्र में एक २ अंग का पूजन करै ॥ विष्णु का अरुंधतीजी ने किया है ॥ वशिष्ठजी के कहने से ॥ सब के वास्तें है ॥ ये व्रत बड़ारूप होता है

रोहिणीनक्षत्रमें
पैर और पिंडलीन का पूजन करै
अश्विनीनक्षत्रमें
घोंटूपूजे
उत्तराषाढनक्षत्रमें
उरूकापूजनकरै
भाद्रपदनक्षत्रमें

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

॥ दोनों वगल का पूजन करै

रेवतीनक्षत्रमें

॥ दोनोंछातीकापूजनकरै

अनुराधानक्षत्रमें

पेट का पूजन करै

धनिष्ठा नक्षत्रमें

पीठकापूजनकरै

विशाषानक्षत्रमें

दोनों भुजा का पूजन करै

हस्तिनक्षत्रमें

दोनों हथेरीन का पूजन करै

पुनर्वसुनक्षत्रमें

अंगुलीनकापूजनकरै

श्लेषानक्षत्रमें

नखनका पूजन करै

ज्येष्ठानक्षत्रमें

नार का पूजन करै

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्रवणनक्षत्रमें
दोनोंकानका पूजन करै
पुष्यनक्षत्रमें
मुखका पूजन करै और पैर का करै
शतविशाखानक्षत्रमें
दोनों ओठन का पूजन करै
मघानक्षत्रमें
नाक का पूजन करै
मृगशिरानक्षत्रमें
नेत्रनका पूजनकरै
चित्रानक्षत्रमें
ललाटका पूजन करै
भरनीनक्षत्रमें
सिरकापूजनकरै

पीछे समाप्ती में चन्द्रमा का पूजन करै ॥ सब नक्षत्रन में एक एक ब्राह्मण भोजन करावै ॥ आदि अन्त में व्रत करै ॥ और शैय्या मशहरी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लगाकर दे नक्षत्र पुरुष सामर्थ्य माफिक सो
ने का शय्या पर पूजै ॥ ब्राह्मण ब्राह्मणी का
पूजन करै ॥ वस्त्र आभूषण से सामर्थ्य मा
फिक शय्या का पूजन करै ॥ गौ वत्सा सहि
त दे ॥ छत्री जूती दे ॥ घी का पात्र दानक
रै ॥ इस मंत्र से शैय्या दे ॥

मंत्र

यथानलक्ष्म्याशयनं तवशून्यंज
नार्दनः॥ शय्यामवाप्यशून्यास्तु त
थाजन्मनिजन्मनि ॥

अर्थ

तेसे देकर प्रार्थना करै ॥ न सामर्थ्य होय तो गौ
घी के पात्र सहित दे ॥

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे नक्षत्र पुरुष
व्रताध्यायः
श्रीदामोदरदासेण कृता
भाषायं

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथब्रह्मकूचव्रत

कार्त्तिक कृष्णपक्ष की चौदस को उपवास करै रात में पंचगव्य पियै ॥ कपिला गौ का गोमूत्र कारी गौ का गोबर ॥ पीरी गौ का दूध ॥ लाल गौ का दही ॥ धूसर वर्ण की गौ का घी॥ कुशा का जल वेदमंत्र से मिलाकर पियै ॥ मावश को स्नान कर तर्पण करै ॥ ब्राह्मण भोजन करावै ॥ पर्म पवित्र है ॥ सर्व पाप नाशने वाला है ॥ सर्व कामना के देनेवाला है ॥ यह व्रत कभी करै कार्त्तिक में जरूर करै ॥ अथवा कपिला गौ का दूध आदि पांचों होयं ॥

अथवैलदान

चांदी की पूंछ बनवावै ॥ वस्त्र उढावै पूजन करै ॥ जितने वैल के रोम हैं ॥ उतने वर्ष विष्णुलोक में वसै ॥ गौ के बराबर है ॥

इस मंत्र से दे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मंत्र

धर्म्मस्त्वंवृषरूपेण जगदानन्दकारकः ॥ अष्टामूर्त्तेरधिष्टानमतपाहि सनातनः ॥

अथभैंसदान

दूध देती हुई जमान सोने का तिलक करे ॥ लाल वस्त्र उढावे ॥ घंटा बांधे ॥ दोहनी दे सप्त धान दे ॥ प्रदक्षिणा करे ॥ सुपात्र ब्राह्मण को दे ॥ सींग का संकल्प करे ॥ पूंछ पकडकर नहीं ॥

इस मंत्र से दे

मंत्र

धर्म्मराजस्यसाहाये यस्य ःपुत्राप्रतिष्ठिता ॥ महिषासुरस्यजननीयारक्तवरदामम ॥

श्लोक

दशधेनुसमाराजन्महर्षीनारदोब्र

वीत् ॥ विंशतिर्गोसमंव्यास सर्वदानो त्तमाकविं ॥

अथरक्षाबंधन

श्रावण की पूनों को रक्षा बांधै ॥ एक पोटरी बनावै रेशमी वस्त्र की अथवा सूती ॥ चांवल भरकर चित्र विचित्र सूत से पोटरी को बांधै ॥ पात्र के ऊपर रक्खै ॥ लीपकर चौक पूरै ॥ उस पर पात्र रक्खै ॥ दूर्वा पुष्प से पूजन करै ॥ इस मंत्र से भुजा में बांधै ॥ बलिराजा के जीतने को इन्द्रानी ने इन्द्र को बांधी थी जब से संसार में चली है ॥ वर्ष दिन मंगल रहता है ॥

मंत्र

येनबद्धोबलीराजा दानवेन्द्रोमहा बलः ॥ तेनत्वांमभिबध्नामि रक्षोमा चलःमाचलः ॥

अथबकरीदान

कारी जवान बकरी अजापाल राजा ने बकरी का दान किया ॥ स्वर्ग को गया ॥ सप्त अन्न पर खडी करै ॥ वस्त्र उढावै ॥ मूंगा आदिक रत्न पहरावै ॥ सोने के सींग ॥ तांवे की पीठ ॥ कांशे की दोहनी ॥ बच्चावारी होवै ॥ वगल में तिलोदक दे ॥

इसमंत्र से दानकरै

मंत्र

मंत्रवासेअजेश्लक्षणे यज्ञसंपत्करे शुभे ॥ स्पृष्टेत्वंदहमेपापं जन्मान्तर शतैःकृतं ॥

अर्थ

देकर प्रदक्षना करै ॥ सूर्य्य को देखै वासुदेव मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ऐसें कहे नमस्कार करै यज्ञनाथ प्रसन्न हो ॥ और जल ब्राह्मण के हाथ में दे ॥ सर्व पाप नाश होते हैं ॥ जैसे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सूर्य्य के उदय होने से जाड़ा जाता है ॥ पर्व काल में दे ॥

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे अजादान अध्यायः

इति श्रीदामोदर दासेण कृता भाषायं

अथ अनंतव्रत

वज्र उवाच

युवनाश्वेन यद्राज्ञा पुत्रीयं तु कृतं व्रतं ॥ तमहं श्रोतुमिच्छामि जनानां हितकाम्यया ॥

मार्कण्डेय उवाच

पुत्रीयं ते प्रवक्ष्यामि व्रतं भूपालसत्तम ॥ अनंतव्रतमित्युक्तं सर्वतः पुत्र जन्मदं ॥

अर्थ

श्रीकृष्ण के पंती वज्रनाभ राजा मार्कण्डेय जी से पूंछते हैं ॥ कि युवनाश्व राजा नें पुत्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

के वास्ते जो व्रत किया है ॥ सो हम सुना चाहते हैं ॥ मनुष्यन के हित के वास्ते मार्कण्डेयजी कहते हैं ॥ हे भूपाल सत्तम अनंत नाम व्रत सुनों ॥ पुत्र के देनेवाला है ॥ विष्णु की प्रतिमां का पूजन करै ॥ उपवास करके अगहन में आरंभ करै ॥ मार्गशिर में मृगशिरा नक्षत्र में वाईं पिंडली का पूजन करै ॥

पौषमेंपुष्यनक्षत्रमें ॥

वाईं कमर का पूजन करै

माघमेंमघानक्षत्रमें

वाईंभुजाका पूजनकरै

फागुनमें उत्तराफाल्गुणनक्षत्रमें

वायेंकन्धाका पूजन करै

गोमूत्र से चारों नक्षत्र में स्नान करावै ॥ लाल पुष्पन से पूजन करै ॥ तिल और तांवा ब्राह्मण को दे ॥ घी से होम करै ॥ गोमूत्र से आचमन करै ॥ हविष्य अन्न खाय ॥ इस

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्रत में जो नाम महीना का है ॥ वो ही नाम नक्षत्र ओं का है॥ इन नक्षत्रन में इस विधि से करै ॥

अब दूसरे चारमास कहते हैं
चैत्रमेंचित्रानक्षत्रमें
दहिनेकंधाकापूजनकरै
वैशाखमेंविशाखानक्षत्र
में दहिनी भुजा का पूजनकरै
ज्येष्ठमेंज्येष्ठा नक्षत्रमें
दहिनी कमर का पूजन करै
अषाढमेंपूर्वाषाढनक्षत्रमें
दहिनीपिंडुली कापूजनकरै

इन नक्षत्रन में दूध से स्नान करावै ॥ पीले पुष्पन से पूजन करै ॥ धान से होम करै ॥ जो चांदी ब्राह्मण को दे ॥ अन्न चाहै सो राक्त खाय ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अवतीसरेचारमासकहतेहैं
श्रावणमें श्रवणनक्षत्र
में पैरन का पूजन करै
भादोंमेंभाद्रपदनक्षत्र
में इन्द्री का पूजन करै
आश्विनमेंआश्वनीनक्षत्र
में हृदय का पूजन करै
कार्त्तिकमेंकृतिकानक्षत्र
में शिर का पूजन करै

इन नक्षत्रन में दही से स्नान करावै ॥ शत्का पुष्पन से पूजन करै ॥ दूध से होम करै ॥ घी सोना सहित ब्राह्मण को दे ॥ दही खाय ॥ इस मंत्र का जप करै ॥ इसी से होम पूजा आदिक करै ॥

मंत्र

ॐअनंतायनमः

वर्ष दिन में समाप्ती करै ॥ ब्राह्मण भोजन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

करावै ॥ सामर्थ्य माफिक दान दे ॥ वर्ष दिन में जिस कामना से करै वो सिद्ध होय ॥ निष्काम करै सर्व पाप नाश होंय ॥

श्लोक

सतद्व्रतंमहाराज पुण्यंस्वस्त्ययनंप रं ॥ अनंतव्रतमित्युक्तं सर्वकल्मष नाशनं ॥

इति श्रीविष्णुधर्मोत्तरे श्रीदामोदर दासेण कृता भाषायं दान चंद्रिका

अथशिवरात्रीउद्यापन लिख्यते

मंडप बनावै मंडप पर कलशा रक्खै ॥ कलशा में गोरोचन डालै ॥ कलशा पर शिव पार्वती सहित पूजन करै ॥ इनके दक्षिण भाग में दीपक रक्खै ॥ पूजन करै ॥ रात में जागरन करै ॥ प्रहर २ में पूजन करै ॥ नृत्य गी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तादिक कर रात व्यतीत करै ॥ सुवह वेदावि
धि से पूजन करै ॥ ब्राह्मण का पूजन करै ॥
यज्ञोपवीत वस्त्रादिक दे ॥ मोहर अथवा सो
ना दे ॥ घृत खीर तिल यव इन से होम करै
शिव मंत्र से नवग्रहन का पूजन करै ॥ सो
ने की मूर्ति शिवजी की और चांदी की पार्व
ती की शय्या पर रखकर सात धान गौसहि
त दे ॥ गुरू का पूजन करै ॥ और वस्त्रादि
क दे ॥ ब्राह्मण भोजन करावै ॥ ढाई रुपैया
दक्षिणा दे ॥ इस व्रत का फल शिवजी को
अरपन करै ॥

धेनुंसदक्षिणांदद्या त्सुशीलांपय
स्विनी ॥ सुवर्णशृंगीरौप्यखुरीं
कांश्यदोहनसंयुतां ॥ रत्नपुच्छां
वस्त्रयुतां ताम्रपृष्टांमलंकृतां ॥
सुवर्णनसमोपेतां आचार्य्यायचसा
धवे ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इसमंत्र से पुष्पांजलि दे ॥

मंत्र

देवदेवमहादेव शंभोशंकरवैहर
व्रतेनानेनदेवेश कृपांकुरुममोपरि
मत्कृत्यानुसारेण व्रतमेतत्कृतं
शिव ॥ अज्ञानाद्यदिवाज्ञानाज्ज
पपूजादिकंमया ॥ कृतंतदस्तुसफ
लंकृपयातवशंकर ॥

अर्थ

चौदश को उद्यापन करै ॥ मावश को मध्यान्ह में स्नान कर पिता के नाम के पिण्ड दे ॥ हज़ारों वर्ष की तृप्ती होय ॥ साधु ब्राह्मण भोजन करावे ॥ भूखे को अन्न दे ॥ कुटुम्ब सहित आप खाय ॥

इति श्रीशिवपुराणे श्रीदामोदरदासेण
कृताभाषायं
दानचंदिका

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथशिवपूजन

जो जो पुष्प पत्र अन्नादिक लिखते हैं ॥ सब एक एक लक्ष शिवजी पर चढावे ॥ कुशा चढावै मुक्ति होय ॥ दूर्वा चढावै बड़ी उमर पावै धतूरे के लाल पुष्पन से पुत्र होय ॥ निष्काम चढावै कैलाश जाय ॥ अगस्त पुष्प से तप दानादि से जो फल होता हैं वो पावै॥तुलसी से-भुक्ति मुक्ति पावै॥ आक पुष्पसे वड़ा यशस्वी होय ॥ कन्नेर पुष्पसे रोग रहित होय॥ निष्काम चढ़ावै शिव कोपासहोय ॥ अतसी पुष्पसे बिष्णुबल्लभहोंय॥छोंकड़ा के पत्ता चढावै मुक्ति पावै ॥ तिली के पुष्प से मुक्ति होय ॥ वीस कमल पुष्प का एक सेर भया ॥ हज़ार वेलपत्र का एक सेर भया इस हिसाब से लाख जानों ॥ समाप्ती में ब्राह्मण भोजन करावै ॥

अथ अन्न चढ़ाने की विधि लिख्यते

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नवसेर आधपाव चांवल लाख हुरा ॥ शिवजी
के ऊपर शुक्लवस्त्र रखकर चढावै ॥ चढ़ा
कर ऊपर श्रीफल रक्खै ॥ इसी माफिक सब
चढावै ॥ ग्यारह ब्राह्मण भोजन करावै ॥ ढा
ई रुपया दक्षिणा दे ॥ एक हजार शिव मंत्र
का जप करता जाय चढाता जाय ॥ सर्व पाप
से मुक्त होय ॥ आधसेर तीन छटांक तिल
लाख हुरा ॥ पूर्व विधिवत् चढावै ॥ सर्वय
ज्ञ के फल को पावै ॥ आठसेर ढाई पाव य
व लाख हुरा चढावै ॥ स्वर्ग कों जाय ॥ आ
ठसेर गेहूं चढावै ॥ धन पुत्रादिक से सुखी
रहै ॥ सात सेर ढाईपाव मूंग चढावै ॥ सर्व
सुख होय ॥ साढे आठसेर उडद चढावै ॥
शत्रुनाशहोय॥एकसेर एक छटांक राई चढ़ावै
पापनाशहोंय॥सवासेरसरसों चढ़ावै शत्रुनाशहो
य॥निष्काम चढ़ावै शिवजीकापारषदहोय॥एक
सेरकांगनी चढ़ावै॥कांगनीसेंबारहब्राह्मण भो-

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

जन करावै ॥ महाफल होय ॥ शिवमंत्र के हजार जप तक गंगाजल की धारा चढ़ावै ॥ मोक्ष होय ॥ दूध बूरा डालकर पौंडेन के रस की घृत की शहत की सुगंधी तेल की सरसों के तेल की इन सभों का माहात्म्य सब नहीं लिखतेएक श्लोक लिखते हैं

श्लोक

सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैःसर्वकामिकैः ॥ रुद्रकन्यासमाकीर्णैर्वाद्यसमन्वितैः ॥ शिववत्क्रीडतेभोगी यावदाहुतसंप्लवं ॥

अर्थ

कोटि सूर्य्य के माफिक विमान में बैठकर इच्छा पूर्वक रुद्र की कन्यन के साथ नृत्यगान युक्त शिवजी के माफिक महाप्रलय तक बिहार करै ॥ ग्यारह ब्राह्मण भोजन समाप्ती में अच्छा माफिक करावै ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इति शिव पुराणे

अथएकाशीउद्यापन

जिस दिन उद्यापन करै ॥ उस दिन शाम को भोजन करै ॥ वामनजी की सोने की प्रतिमा बनवावै ॥ आवाहन प्रतिष्ठा कर षोडशों प्रकार पूजन करै ॥ एक दही का पात्र रक्खैं जल के करुआ सुगंध डालकर रक्खै ॥ छत्ता माला लकडी कूंडी इनको रक्खै ॥ अनेक तरह के नैवेद्य आदि सें पूजन करै ॥ तिलन के ऊपर खीर सें होम करै ॥ पूर्णाहुति तिलन सों करै ॥ षोडश आहुती खीरकी षोडश तिल यंव घी चांवल इन की पुरुष- सुक्त से होम करै ॥ अथवा विष्णमंत्र से दश ब्राह्मण भोजन करावै ॥ करुअन के जल सें आप स्नान करै इस मंत्र से प्रतिमा दे

मंत्र

वामनोबुद्धिधोदाताद्रव्यस्थोवा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मनोस्त्वयं ॥ वामनोस्यप्रतिग्राही
तेनवामननतेनमः ॥ वामनः प्रतिग्र
न्हाति वामनोवैददातिच वामनस्तार
कोभाभ्यांतेन वामन ते नमः ॥

इतिभविष्योत्तरपुराणे

अथ शिवपर लक्षअन्न पूजन उद्यापन

सौ पल पंचामृत सें स्नान करावै ॥ अर्थात् सवा छः सेर से ॥ नारियल का नैवेद्य ध्वजा चढावै ॥ दो स्वेत वस्त्र दे ॥ तिलन सें होमकरै ॥ ब्राह्मण भोजन करावै ॥ गुरू का पूजन करै ॥ इसके करने से शिवजी कहते हैं ॥ कि मेरे समीप रहै ॥ इस मंत्र से प्रार्थना करै ॥ मंत्र

नमः शिवायशान्ताय सगुणायनमोनमः ॥ सर्वेश्वरायदेवाय कारणयहेतवे॥ निवेदयामिचात्मानंत्वंग

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तिपरमेश्वरः ॥ भूमौस्खलितपादा
नां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयिजाता
पराधानां त्वमेवशरणंप्रभो ॥

इतिब्रह्मपुराणे

अथ रामनाम लिखने का महात्म्य उद्यापन

श्रीमहादेवउवाच

श्रुणुदेविप्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं
महत् ॥ प्राप्नोतिपरमांवृद्धिं दीर्घायु
पुत्रसंपदं ॥ रामनामलिखेद्यस्तु ल
क्षकोटिशतावधिः ॥ राकैकमक्षरंपुं
सां महापातकनाशनं ॥ सकामोपिलि
खेद्यस्तु निष्कामोवापियोलिखेत ॥
इहैवसुखमाप्नोति मोक्षंचान्तेसमाप्नु
यात् ॥

अथउद्यापन

मंडप बनावे ॥ राम लक्ष्मण हनूमान जानकी।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

की मूरत सोने की बनवावै ॥ चांदी का अथ
वां तांबे का सिंहासन बनवावै ॥ पीत वस्त्र
पहिरावै ॥ चांवलन पर कलशा स्थापन क
रै ॥ चांवल चौंसठसेर श्रद्धा माफिक ॥ व
तीससेर सोलह सेर ॥ आठ कलशा आठ ना
रियल ॥ एक रामचन्द्र के हाथ में ॥ सात
कलशों पर ॥ कलशों में रत्न डालै ॥ सप्तअ
न्न रक्खै ॥ मधुपर्क से पूजन करै ॥ गणेश
का पूजन नवग्रहन के नाम से दिकपालन
के नाम से

दशोदिक्यपालेभ्योस्वाहा

इसी माफिक नवग्रहन को करै पुरुषसुक्त सें
अथवा विष्णुमंत्र सें होम करै ॥ तिल घी से
आचार्य्य का पूजन करै ॥ सामर्थ माफिक ब्राह्म
ण भोजन करावै ॥ केला के फल सहित तीन
बालक तीन कन्यन को भोजन करावै ॥ शि
व पार्वती का पूजन करै ॥ तिल सहित घीपा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

त्र दे ॥ क्षेत्रपालन को वली दे ॥ इस मंत्र से प्रतिमा दे ॥

मंत्र

रामसीतासमौमित्रि हनुमद्भक्तित त्परः ॥ दानेन रामत्त्वंभुक्ति मुक्तिप्र दोभवः ॥ सीतासौमित्रिहनुमद्युतं रामसदक्षिणाददामि द्विजवर्यस्यो रामो मे प्रीयतामिति ॥

इसी से रामनवमी का उद्यापन करै

अथऋषीपंचमी उद्यापन

पूर्व दिवस शक वक्त भोजन करै ॥ दूसरे दिवस मंडप बनावै ॥ उसपर कलशा स्थापन करै ॥ यज्ञोपवीत पहिरावै ॥ पंचरत्न फल पुष्प अ क्षत यव डालै ॥ घड़े में वस्त्र से ढांक दे ॥ आ ठ दल का कमल लिखै ॥ कलशा पर रख कर पूजन करै ॥ पंचरंग चांदनी बांधे ॥ म ध्यान में सोने की प्रतिमा ॥ अथवा सप्तऋषि

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

न का अरुंधती का आवाहन कर घडे पर पूज
न करै ॥

कश्यप ॥ अत्री ॥ भरद्वाज ॥ वि
श्वामित्र ॥ गौत्तम ॥ जमदग्नि
वशिष्ट ॥

ये सात ऋषी इनके नाम से होम करै ॥ राक
सौ आठ आहुती गुरू का पूजन करै ॥ साम
र्थ होय तौ गौ दे ॥ इसके करने से सर्व पाप
से छूटै ॥ उत्तमगति होय ॥

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे

अथतिलदान

तांवे के पात्र में तिल दे सोना सहित श्रद्धामा
फिक सोलह मुट्ठी तिल ॥

विप्रायदत्तंहरतिपापजन्मशतोद्भव

इति कूर्मपुराणे

इसमंत्रसेंदे

मंत्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तिलः स्वर्णयुतास्तुभ्यं प्रदत्ताह्यघना
शनाः॥ विष्णुप्रीतिकरानित्त्य मतःशां
तिप्रयच्छत॥

अथसुरूपाद्वादशीव्रत

पौषमास में जिस दिन पुष्य नक्षत्र होय उस दि
न स्वेत गौ दूसरा रंग नहोय॥ उसका गोबर भौ
न होकर अधर ले॥ ज़मीन में नगिरै॥ जब त
क कृष्णपक्ष की एकादशी नआवै तब तक ए
क वक्त भोजन करै॥ विष्णु का चिंतमन करै
एकादशी को नदी में अथवा कुण्ड में स्नान क
रै॥ विष्णुका पूजन करै॥ तिल मिश्रित नै
वेद्य अनेक फल सहित इस मंत्र से अर्घ्यदे

मंत्र

नमः परमशान्ताय विरूपाक्षनमो
स्तुते॥ सर्वसंकष्टनाशाय ग्रहाणार्घ्यं
नमोस्तुते॥

अर्घ

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा या तो चित्र की या सोने की आवाहन कर पूजन करै ॥ और उस गोबर से और तिल सें पुरुषसुक्त सें होम करै ॥ अथवा विष्णुमंत्र सें ॥ एक सौ आठ आहुती सें ॥ होम के पीछे श्राद्ध करै ॥ ब्राह्मण को भोजन कराय प्रतिमा दे रात में जागरन करै ॥ हरि सें प्रार्थना करै इस व्रत की कथा बहुत है ॥ संक्षेप से कहते हैं ॥ सत्त्यभामा कुरूपथी देवकी के और कृष्ण के कहने से रुक्मणी नें एक आहुती का फल सत्त्यभामा को दिया ॥ इस सें सब सें ज़्यादा हरि की प्यारी हुई ॥

ईश्वर उवाच

एवंयः कुरुतेदेवि सुरूपाद्वादशी व्रतं ॥ नरोवायदिवानारी तस्यपु ण्यश्टणस्यमे ॥ दौर्भाग्यंनश्यते तस्य अपिजन्मान्तरार्जितं ॥ अपि

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पापंसुसंपर्क्काज्जायतेकारणान्त
रात् ॥ तस्यापिनश्यते दुःख वै
रूप्यंतस्यजन्मानि ॥ वंधुभिर्नच
वैलोके नैष्टैसहावियोगिता ॥ जा
यतेगोत्रवृद्धिश्च कीर्त्तिमानजा
यते भुवि ॥ जातिस्मरणमाप्नोति
पदंनिर्वाणमाप्नुयात् ॥ पठ्यमा
नमिदंभक्त्यायःशृणोतिसमाहितः
पुण्यंप्राप्नोति सततंस्वर्गलोकेम
हीयते ॥

इतिस्कंदपुराणे

अथवारहमासदान

फाल्गुणमें

कांगनी दान करै ॥ राक वक्त भोजन करै ॥
सौभाग्य होय ॥ सप्त अन्नदान करै ॥
चैत्रमें ॥ रंगाविरंगे वस्त्र दे ॥
वैशाखमें ॥ यव गेहूं ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ज्येष्ठमें ॥ जलघट
अषाढमें ॥ चन्दन कपूर ॥ महा फल होय
श्रावणमें ॥ छत्ता ॥
भादोंमें ॥ माखन ॥
आश्विनमें ॥ गुड़ शक्कर के लड्डू सोना
सहित दे ॥
कार्त्तिकमें ॥ दीपदान ॥ सर्व काम प्राप्ति हों
माघमें ॥ सोना तिलदान करैं ॥ इसने सब
कुछ करालिया ॥

इति देवीपुराणे

अथ कुमारीपूजन

ब्रह्मोवाच

नतथातुष्यतेशक्ति र्होमदानजपै
नतु ॥ कुमारीभोजनेनात्र यथादे
वीप्रसीदति ॥ पितरोवसवोरुद्रा
आदित्यागणलोकपः ॥ सर्वेते
पूजितास्तेन कुमार्यायेनपूजिता

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इस मंत्र से देवी का आवाहन कर लिपे पर षोड़शो प्रकार पूजन करै ॥

मंत्र

नवदुर्गात्मिकांसाक्षात्कन्यामावा
ह्याम्यहं ॥

अर्थ

कोई दोष कन्या में नहोय अंग हीनादि बहुत रोंम नहोंयं ॥ दासी की नहोय ॥ रोगिणी न होय ॥ सर्ब कामना के वास्ते ब्राह्मण की ॥ जय के वास्ते क्षत्री की ॥ धन को वैश्य की पुत्र कामना को शूद्र की ॥ साक्षात देवी भावना से खीर लड्डू आदि से भोजन करावै बस्त्रादिक दे॥

इस मंत्र से पूजन करै

मंत्र

काचिन्मंत्राक्षरमयी
इति देवीपुराणे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथराज्यव्रत

जिस दिन उत्तरायण सूर्य होयं ॥ उस दिन एकसे र गौ के घृत सें हरि को स्नान करावै ॥ ब्राह्मण को घोड़ी दे ॥ सर्वपाप से मुक्त होय ॥ सूर्य्यलो-क जाय ॥ पीछें राजा होय ॥

अथवृंताकव्रत

वर्षादिन अथवा छै मास अथवा तीन मास अथवा जन्मभर को जो वेंगन त्यागै ॥ यमपुर कोनहीं जाय ॥ हमेश वाला हरि में लीन होय

अथउद्यापन

भरणी में अथवा मघा नक्षत्र में एक दिन व्रत कर इन देवतन का पूजन करै ॥ हाथ में कुशा लेकर सुगंधी जल सहित आवाहन करै ॥

यमराजमावाहयामि ॥

इसी माफिक इनको आवाहन करै

काल ॥ नील ॥ चित्रगुप्त ॥ वैवस्वत ॥ मृत्यु ॥ परमेष्ठिन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इनको आवाहन कर तिल घी से होम करै ॥

यमराजायस्वाहा ॥ कालायस्वाहा
नीलायस्वाहा ॥ चित्रगुप्तायस्वाहा
वैवस्वतायस्वाहा ॥ मृत्युवेस्वाहा
परमेष्टिनेस्वाहा

इस माफिक एक सौ आठ आहुती सें होम करै ब्राह्मण को वस्त्र में वेंगन घी सहित दे ॥ पुंडरीक अश्वमेध यज्ञ का फल होय ॥

इतिभविष्योत्तरपुराणे

अथलक्षबत्तीव्रत

श्रावण शुक्लपक्ष पडिवा से नेंम करै ॥ एक हजार बत्तीं की आर्त्ती विष्णु की अथवा शिव की करै ॥ सामने करकें रखदे ॥ बत्ती एक तागे की अथवा दो की तीन की माघ में वैशारव में करै कार्त्तिक की पूर्णिमासी को उद्यापन करै ॥ विष्णु का पूजन कर होम करै ॥ तिल यव घी सें एक हज़ार आहुती सें ॥ एक हज़ार बत्ती गौ

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

के घी में तर करकें ॥ ज्यादा श्रद्धा होय तो ती
स पल घी में ॥ अर्थात आधपाव कम दो सेर
सोने की बत्ती चांदी का दीपक ॥ कांसे के
पात्र में रखकर इस मंत्र से दे ॥

मंत्र

रौप्यपात्रीस्थितंदीपं हेमवर्त्तिसम
न्वितं ॥ कांस्यपात्रेणपिहितं ददा
मिव्रतपूर्त्तये ॥

अर्थ

श्रद्धा माफिक ब्राह्मण भोजन करावे ॥

एवंवर्त्तिप्रदानेन विष्णोरमितेज
सः ॥ कोटयोब्रह्महत्यानां मगम्या
गम कोटयः ॥ तथैवात्युग्नपापा
नां कोटयोथसहस्त्रशः ॥ नश्यंति
नात्रसंदेहो नारीणान्तुनरस्यवा ॥

लक्ष प्रणाम करे ॥ वर्षायत में अथवा वैशा
ख आदिक में साष्टांग स्त्री पंचांग करे ॥ लक्ष

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

प्रदक्षिणा करै ॥ जो महात्म्य वत्तिन का है उ
ससे बिषेश इनका है ॥

अथ ६० व्रत

नंदिकेश्वरउवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि व्रतषष्ठीमनुत्त
मां ॥ रुद्रेणाभिहितांदिव्यां महापात
कनाशिनीं ॥

अर्थ

अथ देवव्रत ॥ वर्षदिन शाम को भोजन करै ॥ समा
प्ती में सोने का चक्र और त्रिशूल गौ वस्त्र सहित ब्रा
ह्मण को दे ॥ शिवपार्वती कों नमस्कार करै ॥ शिव
लोक कों जाय ॥

अथशिवव्रत

राक वक्त भोजन करै ॥ सोने का बैल तिलधेनुस
हित दे ॥ पाप शोक के नाशने वाला है ॥ शिवलो
क के देनेवाला है ॥

अथप्रीतिव्रत

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अषाढ से चार मास तेल नलगावै ॥ समाप्तीमें
भोजन दे ॥ विष्णुलोक को जाय ॥

अथकामव्रत

वर्षदिन अथवा एक मास शहत दही दूध घी
पौंडा त्यागै ॥ समाप्ती में महीन वस्त्र और जो
रस त्यागे हैं ॥ उनको पात्र में भरकर ब्राह्मण
ब्राह्मणी का पूजन कर दे ॥ गौरीमेप्रीयताम् ॥
ऐसें कहै ॥ एक कल्प विष्णुलोक बसै ॥

अथसारस्वतव्रत

तीनों संध्या में मौन रहै ॥ वर्षदिन में समाप्ती
में घी का घडा दे ॥ दो वस्त्र तिल घंटा सहित
विद्याहोय रूप होय ॥ सारस्वत लोक जाय ॥
जहां जाकर फिर नहीं आता ॥

अथघृतव्रत

वर्षदिन पंचामृत से स्नान करावै ॥ हर को
अथवा हरि को ॥ समाप्ति में सोना शंख दे
शिवलोक को जाय ॥ पीछें राजा होय ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अथ सूर्य्यव्रत

माघ में प्रात स्नान करै ॥ समाप्ती में ब्राह्मण ब्राह्मणी को भोजन करावै ॥ सूर्य्य लोक कों जाय ॥

अथाविष्णव्रत

अषाढ आदि चार महीना प्रात स्नान करै कार्त्तिक में ब्राह्मण को भोजन दे ॥ विष्णलोक कों जाय ॥

अथरुद्रव्रत

चैत्र में कोई सुगन्धी वस्तु न लगावै ॥ अंत में सीप में सुगन्धी वस्तु भर कर ब्राह्मण को दे ॥ वरुण लोक जाय ॥

अथ कान्तिव्रत

वैशाख में पुष्प लवण छोड़े ॥ अन्त में-गौ दे ॥ श्रद्धा माफिक बडी कान्ति होय विष्णलोक को जाय ॥ पीछें राजा होय ॥

कल्पवृक्षव्रत

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

तीन दिन दूध पीकर सोने का कल्पवृक्ष श्र
द्धा माफिक बनवाकर दे ॥ चांवल मूंगकी
दाल सहित देवे ॥ ब्रह्मलोक को जाय ॥

अथधराव्रत

श्रद्धा माफिक सोने की अथवा तांबे की पृ-
थ्वी बनवाकर दे ॥ उस दिन दूध पीकर रहै
शिवलोक जाय ॥

अथभमानीव्रत

शिव के मन्दिर में तीज को चांदनी बां
धै ॥ गौ की श्रद्धा होय तो दे॥ शिवपुर जा
य॥

अथ सोमव्रत

शुक्ला दोज को चांदी को चन्द्रमा लवणपा
त्र कांसे का दे ॥ शिवपुर जाय ॥ कल्प पी
छें राजा होय ॥

अथ अहिंसाव्रत

एक मास अथवा वर्ष दिन अथवा जन्मभर

कों मांस त्यागै ॥ अन्त में श्रद्धा माफिकसो
ने का सृग गौ दे ॥ अश्वमेध यज्ञ का फ
ल होय ॥

अथ धान्यव्रत

शुक्ला सप्तमी कों सूर्य्य का पूजन करै ॥
सात अन्न लवण सहित दे ॥ चार घड़ी दिन
रहे जब भोजन करै ॥ सात कुल को तारै॥
और आप तरै ॥

अथ सोमवतीव्रत

एक ब्राह्मण था ॥ उसके घर कोई योगी भि
क्षा मांगने आया ॥ ब्राह्मण की बेटी ने भि
क्षा दी ॥ योगी ने कहा सौभाग्यवती हो॥
लडकी नें माता से कहा ॥ मा योगी से बो
ली ॥ कन्या फेर पड़तेंही विधवा होगी ॥
योगी बोला सिंहल द्वीप में सोमा नाम की
धोवन है ॥ उसके आने से नहीं होगी ॥
धनवती नाम की मा ॥ शिवस्वामी नाम पु

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

त्र सें वोली ॥ गुणवती नाम बहन कों संग लेकर तू सोमा को सिंहलद्वीप सें ला ॥ शिव स्वामी लाया ॥ सोमा की आज्ञा से विवाह होने लगा ॥ उसी वक्त लड़का मर गया ॥ सोमा ने उसी वक्त जिला दिया ॥ सोमवती के व्रत के प्रभाव से ॥

सिनीवालीकुहुर्वापि यदिसोम
दिनेभवेत् ॥ गोसहस्त्रफलंदद्या
त्स्नानंवैमौनिनाकृतम् ॥

अर्थसोमवतीको

मौन होकर स्नान दान करै ॥ हज़ार गौदान फल होय ॥ रेशमी वस्त्र पहर कर पीपरवृक्ष का पूजन इस मंत्र से करै ॥

मंत्र

अश्वत्थाहुतमावास गोविंदस्य
सदाश्रयः ॥ अशेषंहरमेपापं वृ
क्षराजनमोस्तुते ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सोमवारायन्नमः ॥ सोमायैन्नमः

अर्घ

पूजा करके प्रदक्षिणा करै ॥ शक्कर सें ॥ चांदी सें ॥ रत्नसें ॥ तांवेसें ॥ कांशे के पात्र सें पात्र में खाने की चीज़ रखले ॥ फलन सें ॥ पुष्पनसें ॥ वस्त्रसें ॥ मिठाईसें ॥ मेवासें ॥ एक सौ आठ की श्रद्धा नहोय ॥ तो एकी पात्र ॥ एकी वस्त्र ॥ हाथ में लेकर ॥ एक सौ प्रदक्षिणा करै ॥ करिकें ब्राह्मण कों दे स्त्रिन कों दे ॥ व्रत के दिन रुई कंद जोज़मीन से खोदकर निकालते हैं ॥ इनको न छूवै ॥

अथउद्यापन

सोने का पीपर वृक्ष बनवावै ॥ किम्वा तांवे का ॥ कलशे पर अक्षत रक्खै ॥ उस पर पीपर वृक्ष ॥ इस वृक्ष के पास लक्ष्मी नारायण का पूजन करिकें पीपर ब्राह्मण को दे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पीपर की लकड़ीन से ॥ खीर तिलन से होम करै ॥ बारह ब्राह्मण भोजन करावै ॥

एषातेकथितोस्मूयो व्रतराजविधिर्मया ॥ द्रौपदींचसुभद्रांच कारयस्वतथोत्तरां ॥ उत्तरागर्भसंस्थास्तुजीवितंलभतेचिरात ॥

यह व्रत पाप के नाशनेवाला है ॥ विष्णुलोक के देनेवाला है ॥ विधवा नहोय ॥ पुत्र नमरैं ॥

इति श्रीभविष्योत्तर पुराणे

अथपयोव्रत

वर्ष दिन हर मावस को दूध पीकर रहै ॥ अंत में जलघड़ा वस्त्र सहित दे ॥ तेन विष्णु लोकप्राप्तिर्भवति

इति श्रीब्रह्मपुराणे परमहंस श्री दामोदरदासजी कृतभाषायं

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

दानचन्द्रिकासमाप्तम्

शुभम्

मिती कार्त्तिककृष्णा पंचम्यायांगुरु वारसम्बत १९४८ वैक्रमी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri